हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

11 सिलानी गेट क्षेत्र में चला नाला सफाई अभियान

12 आवंटन के अभाव में खंडहर हो गए 696 फ्लैट

खबर संक्षेप

बीपीईएचईएस पाठ्यक्रम छारा कॉलेज में शुरू

बहादुरगढ़। छारा के चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय

महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2026–27 से नया स्नातक पाठ्यक्रम बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन हेल्थ एजुकेशन एंड स्पोर्ट प्रारम्भ किया गया है। यह पाठ्यक्रम खेल, शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा एवं खेल विज्ञान के क्षेत्र में कॅरियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर लेकर आया है। प्राचार्य डॉ. सुशील दलाल ने बताया कि बीपीईएचईएस पाठ्यक्रम पूरे हरियाणा के केवल दो सरकारी महाविद्यालयों में संचालित किया जा रहा है। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों में केवल छारा के चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में ही उपलब्ध है। प्रवेश आवेदन भरने की अंतिम तिथि 12 जुलाई है।

जिला ओपन तैराकी प्रतियोगिता 11 को

बहादुरगढ़। जिला झज्जर तैराकी संघ की ओर से 11 जुलाई को ओपन तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। यह प्रतियोगिता एचएल सिटी स्थित 50 मीटर स्विमिंग पूल में आयोजित की जाएगी। जिला झज्जर तैराकी संघ के सचिव सुनील कादयान ने बताया कि इस प्रतियोगिता में सीनियर, जूनियर, सब-जूनियर के साथ-साथ ग्रुप 4, 5 और 6 के सभी तैराक भाग ले सकेंगे। भारतीय तैराकी संघ के सह-सचिव अनिल खत्री प्रतियोगिता का औपचारिक उद्घाटन करेंगे।

एक किलो 100 ग्राम चरस सहित 2 गिरफ्तार

बहादुरगढ़। एंटी नारकोटिक्स सेल ने बादली थाना क्षेत्र से एक किलो 100 ग्राम चरस के साथ 2 तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान गांव गुभाना निवासी सीनू और हरेंद्र के रूप में हुई है। पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर केएमपी फ्लाईओवर के नीचे एक कार की घेराबंदी कर तलाशी ली, जिसमें चरस बरामद हुई। प्रारंभिक पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि मादक पदार्थ हिमाचल प्रदेश से लाया गया था और क्षेत्र में बेचने की तैयारी थी। बादली थाने में मामला दर्ज कर पुलिस रिमांड पर जांच की जा रही है।

एचटेट लेवल-3 की परीक्षा नकल रहित करवाने को डीसी मैदान में डटी

8 परीक्षा केंद्रों पर 430 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे कानों से बालियां और हाथों से चूड़ियां उतरवाईं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शनिवार को आयोजित हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा-एचटेट लेवल-3 की परीक्षा नकल रहित शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। परीक्षा के आरंभ होने से संपन्न होने तक डीसी वर्षा खांगवाल ने परीक्षा केंद्रों का दौरा करते हुए हर पहलू पर नजर रखी। उन्होंने एचटेट लेवल 3 के लिए बनाए गए सभी 8 परीक्षा केंद्रों का जायजा लिया और संबंधित केंद्र अधीक्षकों व शिक्षा बोर्ड अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि एचटेट लेवल-3 में 8 परीक्षा केंद्रों पर 2469 परीक्षार्थी में से 2039 उपस्थित रहे जबकि 430 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। परीक्षार्थियों के साथ आए अभिभावकों की सुविधा के लिए भी जिला प्रशासन ने सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर परीक्षा अवधि के दौरान पेयजल व्यवस्था, छबील के साथ ही बैठने व पार्किंग के प्रबंध किए।

शनिवार को सायंकालीन सत्र में हुई एचटेट लेवल 3 परीक्षा के मद्देनजर डीसी ने दिनभर फील्ड में रहते हुए सुरक्षा, यातायात, पेयजल, बिजली, सीसीटीवी निगरानी, बायोमैट्रिक सत्यापन तथा अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास के चारों परीक्षा केंद्रों, एलए स्कूल, एब्लेज स्कूल, आरईडी स्कूल झज्जर, इंडो अमेरिकन स्कूल का निरीक्षण कर सुविधाओं का जायजा लिया। वहीं इस दौरान कई परीक्षार्थी देरी से आने पर भागते हुए दिखाई दिए। कई जगह परीक्षार्थी निर्देशों के बावजूद कानों से बाली व हाथों से चूड़ियां आदि उतारती दिखीं। केवल मंगलसूत्र, बिंदी व सिंदूर की छूट है।

झज्जर। एचटेट परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण करते हुए डीसी वर्षा खांगवाल।

डायल-112 पर मदद मांग सकते हैं

डीसी ने बताया कि रविवार को भी परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए डायल 112 सेवा जारी रहेगी। यदि किसी परीक्षार्थी को परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में परिवहन, मार्ग या अन्य किसी प्रकार की परेशानी आती है तो वह तुरंत डायल-112 सेवा से सहायता प्राप्त कर सकता है। आवश्यकता पड़ने पर डायल-112 की टीम परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचाने में भी सहयोग करेगी। इसके अलावा परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए डीईओ कार्यालय में जिला प्रशासन द्वारा स्थापित कंट्रोल रूम का दूरभाष नंबर 01251-253711 भी सहायता एवं जानकारी के लिए उपलब्ध रहेगा।

झज्जर। परीक्षा केंद्र में प्रवेश से पूर्व कान की बाली उतारते हुए परीक्षार्थी।

पुलिस कमिश्नर ने केंद्रों का किया निरीक्षण

झज्जर। शनिवार को जिले में आयोजित हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा (एचटेट) के विभिन्न परीक्षा केंद्रों का पुलिस कमिश्नर डॉक्टर राजश्री सिंह ने निरीक्षण करते हुए सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि ड्यूटी में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। परीक्षा को सकुशल संपन्न कराने के लिए दो डीसीपी, तीन एसीपी सहित करीब 200 पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। संदिग्ध गतिविधियों पर लगातार नजर रखी जा रही है। उन्होंने कहा कि परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में अनधिकृत वाहनों की आवाजाही और अनावश्यक भीड़ पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है।

आज दो सत्र में होगी परीक्षा, प्रशासन अलर्ट

डीसी ने बताया कि रविवार को प्रातःकालीन सत्र में लेवल-2 की परीक्षा सुबह 10 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक तथा सायं कालीन सत्र में लेवल-1 की परीक्षा दोपहर 3 बजे से शाम 5:30 बजे तक आयोजित होगी। उन्होंने अभ्यर्थियों से समय से पहले परीक्षा केंद्र पहुंचने तथा आवश्यक दिशा-निर्देशों का पालन करने की अपील की। उन्होंने बताया कि जिला में एचटेट परीक्षा के लिए कुल 14 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें 11 केंद्र झज्जर तथा 3 केंद्र बहादुरगढ़ में स्थापित किए गए हैं। तीनों स्तरों की परीक्षाओं में कुल 8,318 परीक्षार्थी शामिल होने संभावित हैं।

एसडीएम ने केंद्रों पर जाकर व्यवस्था जांची

बहादुरगढ़। एसडीएम अभिनव सिवाच ने बहादुरगढ़ में बनाए गए एचटेट परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया और परीक्षा के लिए किए गए प्रबंधों का जायजा लिया। नोडल अधिकारी के रूप में एसडीएम अभिनव सिवाच ने मॉडर्न स्कूल, माउंट व्यू स्कूल और बाल विकास स्कूल में बनाए गए परीक्षा केंद्रों पर सुरक्षा व्यवस्था, सीसीटीवी कैमरे, पेयजल, विद्युत आपूर्ति, कंट्रोल रूम, बैठने की व्यवस्था तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि परीक्षा के दौरान सभी व्यवस्थाएं सुचारु रहें। केंद्रों पर सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए हैं और निगरानी व्यवस्था को भी मजबूत बनाया गया है।

हादसों में गई चार की जान

ट्रेन की चपेट में आने से पिता की मौत, बच्ची गंभीर

- रोहद में हादसे के वक्त गोद में थी बच्ची, पीजीआई रेफर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

दिल्ली-रोहतक रेलवे लाइन पर रोहद के पास दर्दनाक हादसा हो गया। यहां ट्रेन की चपेट में आने से पिता की मौत हो गई और 5 वर्षीय मासूम बच्ची घायल हो गई। घायल को पीजीआई रोहतक रेफर किया गया है। घटना दोपहर करीब 4 बजे की बताई जा रही है।

रोहद के निकट एक व्यक्ति ट्रेन की चपेट में आ गया। हादसे के दौरान उसकी गोद में 5 वर्षीय बच्ची भी थी। गंभीर चोट आने के कारण व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई। सूचना पाकर जीआरपी बहादुरगढ़ टीम मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई की शुरू की। शव को बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल में रखवाया और बच्ची को पीजीआई रोहतक कर दिया गया। मृतक की पहचान बगैरन सिंह के रूप में हुई है। वह बिहार का रहने वाला था। फिलहाल रोहद में रहता था और एक प्लाइवुड फैक्ट्री में काम करता था। परिजनों के बयान के आधार पर पुलिस मामले में आगामी कार्रवाई करेगी। रविवार को शव का पोस्टमार्टम होगा।

ट्रेन से कटकर महिला व युवक की जान गई

बहादुरगढ़। दिल्ली-रोहतक रेल लाइन पर बहादुरगढ़ क्षेत्र में शनिवार की सुबह 2 हादसे हो गए। यहां ट्रेन की चपेट में आने से महिला सहित 2 लोगों की जान चली गई। पुलिस ने पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू करा दी है। पहला हादसा यहां छोटूराम नगर के पास हुआ। यहां एक युवक ट्रेन की चपेट में आ गया। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू की। प्रयासों के बाद युवक की पहचान 30 वर्षीय अंकित सोनी के रूप में हुई। मूलतः उत्तर प्रदेश का अंकित यहां छोटूराम नगर में रहता था। वहीं, बराही फाटक के निकट रेलवे लाइन पर महिला का शव बरामद हुआ। महिला की पहचान 66 वर्षीय प्रभा देवी के रूप में हुई। वह दुर्गा कॉलोनी की रहने वाली थी।

मोटर चलाते हुए करंट लगने से मौत

बहादुरगढ़ (हरिभूमि न्यूज)। नयागांव में एक व्यक्ति की करंट लगने से मौत हो गई। मृतक की पहचान करीब 42 वर्षीय जयभगवान के रूप में हुई है। मूलतः दिल्ली के कटेवड़ा गांव से था। पिछले कुछ समय से यहां नयागांव में किसी व्यक्ति के यहां रह रहा था। जानकारी के अनुसार, शनिवार की सुबह वह पानी की मोटर चला रहा था। इसी दौरान करंट की चपेट में आ गया। जिससे उसकी मौत हो गई। सदर थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर आवश्यक कार्रवाई की। शाम को शव का पोस्टमार्टम करा दिया। घटना को संयोग मानकर कार्रवाई की गई है।

एशियन चैंपियनशिप में रोहित ने जीता ब्रांज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

थाईलैंड में चल रही एशियन चैंपियनशिप में जिले के पहलवानों का दमदार प्रदर्शन बरकरार है। अब अंडर-20 में हिंद केसरी सोनू अखाड़े के एक और पहलवान रोहित दलाल ने देश के लिए ब्रांज मेडल जीता है।

हिंद केसरी सोनू अखाड़े के एक और पहलवान ने थाईलैंड में सफलता का परचम लहराया

रोहित की जीत पर परिजनों और साथी पहलवानों ने खुशी जताई है। अब रविवार को इसी अखाड़े का साहिल दलाल पहलवान एशियन चैंपियनशिप के मैट पर देश का परचम लहराने उतरेगा।

रोहित दलाल ने 57 किलोग्राम भारवर्ग फ्री स्टाइल में जोर आजमाइश की। क्वालीफिकेशन राउंड में कोरिया के पहलवान को 14-4 के अंतर से मात देकर अगले राउंड में प्रवेश किया। इसके बाद क्वार्टर फाइनल में जीत दर्ज की। सेमीफाइनल में उज्बेकिस्तान के पहलवान से हार हुई। ब्रांज मेडल के लिए मौका मिला तो रोहित ने देश का परचम लहरा दिया। कजाकिस्तान के पहलवान को 7-0 के अंतर से हराया। रोहित दलाल मूलतः आसौदा गांव से है और पिछले काफी समय से हिंद केसरी सोनू अखाड़े में अर्जुन अवॉर्डी धर्मेंद्र दलाल के मार्गदर्शन में अभ्यास कर रहा है। इससे पहले कैडेट वर्ग में एशियन तथा वर्ल्ड चैंपियनशिप में सिलवर मेडल जीत चुका है। अब अंडर 20 में देश का नाम रोशन किया है। कोच धर्मेंद्र दलाल ने कहा कि रोहित बेहद होनहार है। लगातार इसके प्रदर्शन में निखार आ रहा है। भविष्य में बड़े स्तर पर देश के लिए और मेडल जीतेगा। वहीं, रविवार को इसी अखाड़े का साहिल दलाल पहलवान 86 किलोग्राम भारवर्ग में जोर आजमाइश करेगा।

बहादुरगढ़। कोच धर्मेंद्र दलाल के साथ रोहित पहलवान।

कुंजैया गांव में छत से गिरने पर मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

गांव कुंजैया में छत से गिरने के कारण एक व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान करीब 44 वर्षीय सोनी कुमार पुत्र नफे सिंह के तौर पर हुई है। सोनी कुमार दिहाड़ी मजदूरी का कार्य करता था। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार शुक्रवार रात वह काम से आकर अपने घर की छत पर सो रहा था। रात करीब साढ़े दस बजे नींद में उठने के दौरान उसका संतुलन बिगड़ गया और वह छत से नीचे गिर गया। हादसे में उसे गंभीर चोटें आईं, जिसके बाद परिजन उसे स्थानीय नागरिक अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामले के जांच अधिकारी रिंकू ने बताया कि परिजनों के बयानों के आधार पर इत्तफाकिया कार्रवाई अमल में लाई गई है।

11 मिलीमीटर बरसात के बाद दिनभर रही उमस

बहादुरगढ़। बरसात के बाद सेक्टर-6 की मार्केट में भरा पानी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शनिवार सुबह इलाके में कुछ देर के लिए बारिशत हुई। बारिश के बाद दिनभर आसमान में बादल छाए रहे और उमस भरी गर्मी ने लोगों की परेशानी बढ़ाई। अधिकतम तापमान 37 डिग्री दर्ज किया गया। दरअसल, बीते दो-तीन दिन से आसमान में लगातार बादल छा रहे हैं। शनिवार को भी सुबह धूप नहीं निकली और करीब पौने 11 बजे एकाएक बरसात शुरू हो गई। लगभग आधा घंटे में करीब 11 एमएम बरसात हुई। इसके बाद शाम 5 बजे तक आसमान में बादल छाए रहे।

फैक्ट्री कर्मी को 99 हजार की चपत

बहादुरगढ़ (हरिभूमि न्यूज)। साइबर ठगों ने लाइनपार में रहने वाले एक शख्स के खाते में सेंध लगा दी। उसके खाते से 99 हजार 800 रुपये निकाल लिए। फोन पर मैसेज आया तो पीड़ित को ठगी का पता चला। उसने पुलिस को शिकायत दे दी है। साइबर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

पीड़ित मूल रूप से दिल्ली का निवासी है और पिछले कुछ वर्षों से यहां लाइनपार के नेताजी नगर में रहता है। पीड़ित के मुताबिक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र में उसका खाता है। गत 30 जून को वह अपने घर पर था। जब उसने फोन चेक किया तो खाते से 99 हजार 800 रुपये की निकासी का मैसेज आया हुआ था। यह देख वह दंग रह गया। जब बैंक में गया तो कर्मचारियों ने भी यही कहा कि आपके खाते से रुपयों की निकासी हुई है। जबकि मैंने किसी को खाते संबंधित जानकारी नहीं दी।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
GRADED 'A' BY NAAC | NBA ACCREDITED PROGRAMS
Approved by AICTE | Affiliated to MDU, Rohtak | Recognized u/s 2(f) of UGC Act, 1956
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NBA ACCREDITED BY
B.TECH ME, ECE and MBA
RANKED #16 In North India
RANKED #38 Pvt. Institutes in India
RANKED #39 Across India
RANKED #46 Placement Across India
Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
Times Engineering Institute Ranking Survey-2026
ADMISSIONS OPEN 2026-27
B.TECH B.TECH (LEET)
Fire Technology and Safety
CSE, CSE (AI & ML), CSE (DS)
ECE, Electrical
Civil, Mechanical
OTHER UG & PG COURSES
M.TECH | MBA | BBA | MCA
BCA | M.ARCH | B.ARCH
M.PLAN | M.ED | B.ED
COURSES FOR WORKING PROFESSIONALS (in Flexible Timings)
B.TECH
Fire Tech. & Safety / CSE/ Electrical/Civil
M.TECH
CSE/ Structural Design
MBA | MCA
MEGA JOB FAIR
11th July, 2026
Register
For more details
Call: 8684000389 /906
SCHOLARSHIP TEST
GITAM SCHOLARSHIP -CUM- ADMISSION TEST
19th July, 2026
11:00 am Onwards
FREE REGISTRATION FOR TEST
GANGA GROUP OF INSTITUTIONS
Approved by AICTE/UGC/NCTE/COA/MDU
GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP)
9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE)
8684000916 | www.gangainstituteofeducation.com
For Admission Enquiry: 8684000891 / 892 / 893 / 9654292946 | www.gangainstitute.com
Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi | +91-9654292902, 03, 04

HAPPY CHILD COLLEGE OF NURSING
SONIPAT Health for All
Mehlana Road, Opp. Sector-23, Sonepat
(Managed by Balyan Education Society & Approved by HNRC & INC New Delhi)
(A pioneering institute in Nursing Education in Delhi-NCR) Affiliated by Pt. BD Sharma University of Health Science, Rohtak
Contact : 09215550127
Website : hcsnursing.org, Email : info@hcsnursing.org
B.Sc. (N) (4 Years) Eligibility : 10+2 PCB
ANM Arts & Commerce (2 Years) Eligibility : 10+2 PASS
P.B. B.Sc. (N) (2 Years) Eligibility : after GNM
GNM Arts & Commerce (3 Years) Eligibility : 10+2 WITH 40%
2026-27 ADMISSION OPEN
Boys & Girls
All the Courses are Job-Oriented with Excellent Placement
Narender Balyan (Chairman) Mob.: 9215550127

■ 60 हजार बचाने के चक्कर में गंवा सकते हैं 82 लाख रुपये

■ कंपाउंडिंग बताता है कि निवेश में समय ही सबसे बड़ी पूंजी

■ जल्दी शुरुआत करने वालों को मिलता है सबसे बड़ा फायदा

एसआईपी में सिर्फ 1 वर्ष की देरी पड़ सकती है भारी

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि जितना अधिक पैसा निवेश करेंगे, उतना बड़ा फंड तैयार होगा। यह बात सही है, लेकिन पूरी सच्चाई नहीं। निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश की रकम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है निवेश की शुरुआत का समय। यदि कोई व्यक्ति एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक साल की भी देरी करता है तो उसे भविष्य में लाखों रुपये का नुकसान उठाना पड़ सकता है। वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ सबसे अधिक काम करती है। यही वजह है कि एसआईपी की पहली किस्त की कीमत आखिरी किस्त से कई गुना ज्यादा होती है। एक साल की देरी केवल 12 किस्तों का नुकसान नहीं कराती, बल्कि उन किस्तों पर मिलने वाले वर्षों के रिटर्न से भी निवेशक वंचित रह जाता है।

क्यों सबसे अहम है पहली एसआई

कंपाउंडिंग का अर्थ है कि निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे चलकर रिटर्न कमाने लगता है। यानी आपका पैसा केवल बढ़ता नहीं, बल्कि बढ़ा हुआ पैसा भी कमाई करता है। यदि कोई निवेशक 30 वर्ष तक लगातार एसआईपी करता है, तो पहले साल जमा की गई रकम को पूरे 30 वर्षों तक बढ़ने का मौका मिलता है। वहीं अंतिम वर्ष में जमा की गई राशि को केवल कुछ महीनों का ही समय मिलता है। यही कारण है कि शुरुआती निवेश की ताकत सबसे अधिक होती है। विशेषज्ञ इसे निवेश की दुनिया का सबसे बड़ा जादू मानते हैं। जितनी जल्दी शुरुआत होगी, कंपाउंडिंग उतना ही अधिक काम करेगी।

एक साल की देरी का बड़ा नुकसान

मान लीजिए कोई निवेशक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है। यदि वह लगातार 30 वर्षों तक निवेश करता है तो कुल निवेश राशि 18 लाख रुपये होगी। इस अवधि के अंत में उसका फंड लगभग 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। लेकिन यदि वही निवेशक एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक वर्ष की देरी कर देता है और केवल 29 वर्ष निवेश करता है, तो उसका अंतिम फंड घटकर लगभग 1.56 करोड़ रुपये रह जाएगा। यानी केवल 60 हजार रुपये (12 किस्तें) का निवेश टालने की कीमत लगभग 20.43 लाख रुपये हो सकती है। यह उदाहरण बताता है कि निवेश में सबसे बड़ा नुकसान बाजार की गिरावट नहीं, बल्कि समय गंवाने से होता है।

जितनी बड़ी एसआई, उतना नुकसान

एक साल की देरी का असर निवेश राशि बढ़ने के साथ और भी ज्यादा दिखाई देता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 2,000 रुपये की एसआईपी करता है तो एक साल की देरी से लगभग 8.17 लाख रुपये का संभावित नुकसान हो सकता है। 10,000 रुपये मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक के लिए यही नुकसान बढ़कर लगभग 40.87 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। वहीं यदि मासिक एसआईपी 20,000 रुपये की है तो केवल एक साल की देरी भविष्य में करीब 82 लाख रुपये के संभावित फंड को कम कर सकती है। यही कारण है कि निवेश विशेषज्ञ हमेशा कहते हैं कि ₹सही समय का इंतजार मत कीजिए, समय को अपने पक्ष में कीजिए।

आखिर में रफ्तार पकड़ती है कंपाउंडिंग

एसआईपी का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार धीमी लगती है, लेकिन बाद के वर्षों में वही निवेश तेजी से बढ़ने लगता है।

उदाहरण के तौर पर 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी में

- 10 वर्ष बाद कुल निवेश लगभग 6 लाख रुपये होगा और फंड करीब 11.62 लाख रुपये बन सकता है।
- 20 वर्ष बाद कुल निवेश 12 लाख रुपये होगा, लेकिन फंड करीब 50 लाख रुपये तक पहुंच सकता है।
- 30 वर्ष पूरे होने पर कुल निवेश 18 लाख रुपये रहेगा, जबकि फंड बढ़कर लगभग 1.76 करोड़ रुपये हो जाएगा।
- यानी अंतिम दस वर्षों में केवल 6 लाख रुपये का अतिरिक्त निवेश पूरे फंड को 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंचा देता है। यही कंपाउंडिंग की असली ताकत है।

शुरुआत में देरी हो गई तो क्या करें?

यदि किसी कारणवश एसआईपी शुरू करने में देरी हो गई है तो भी नुकसान की भरपाई की जा सकती है।

विशेषज्ञों के अनुसार यदि आपने पहला साल गंवा दिया है तो शेष अवधि में अपनी मासिक एसआईपी थोड़ी बढ़ाकर इस अंतर को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आपकी योजना 5,000 रुपये मासिक एसआईपी की थी और एक साल की देरी हो गई, तो अगले 29 वर्षों तक लगभग 5,655 रुपये प्रति माह निवेश करके उस संभावित अंतर को काफी हद तक भरा जा सकता है। यानी हर महीने केवल 655 रुपये अतिरिक्त निवेश भविष्य में लाखों रुपये का अंतर पैदा कर सकता है।

छोटी एसआईपी भी बनेगी बड़ा फंड

- कई लोग सोचते हैं कि निवेश शुरू करने के लिए बड़ी रकम होना जरूरी है, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।
- वित्तीय सलाहकारों का कहना है कि यदि फिलहाल बड़ी राशि उपलब्ध नहीं है तो 500 रुपये, 1,000 रुपये या 2,000 रुपये से भी एसआईपी शुरू की जा सकती है। जैसे-जैसे आय बढ़े, वैसे-वैसे एसआईपी की राशि भी बढ़ाई जा सकती है।
- नियमित निवेश और लंबी अवधि का अनुशासन ही बड़ा कोष तैयार करने की सबसे प्रभावी रणनीति है।

समय ही सबसे बड़ा निवेश है

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश की दुनिया में सबसे मूल्यवान चीज पैसा नहीं, बल्कि समय है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, लेकिन लंबे समय तक निवेश बनाए रखने वाले निवेशकों को कंपाउंडिंग का सबसे बड़ा लाभ मिलता है। यदि आप भविष्य में आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहते हैं तो निवेश की शुरुआत टालने के बजाय जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी एसआईपी शुरू करें। छोटी-सी शुरुआत भी समय के साथ करोड़ों रुपये का फंड तैयार कर सकती है। इसलिए निवेश का सबसे अच्छा समय आज है, क्योंकि एक साल की देरी भविष्य में लाखों नहीं, बल्कि बड़े निवेशकों के लिए करोड़ों रुपये तक का अंतर पैदा कर सकती है।

पीपीएफ या म्यूचुअल फंड पर लें लोन?

- इमरजेंसी में कौन सा विकल्प है बेहतर
- अचानक पैसों की जरूरत पड़ने पर निवेश तोड़े बिना मिल सकती रकम
- दोनों विकल्पों के फायदे, नुकसान और किसके लिए कौन बेहतर

बिजनेस डेस्क

अचानक मेडिकल इमरजेंसी, बिजनेस में नकदी की जरूरत या किसी अन्य जरूरी खर्च के लिए अक्सर लोग अपने निवेश तोड़ देते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेश को समय से पहले भुनाने के बजाय उसके बदले लोन लेना कई बार अधिक फायदेमंद साबित होता है। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और म्यूचुअल फंड, दोनों पर लोन लेने की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन दोनों की शर्तें, ब्याज दरें और लोन की सीमा अलग-अलग हैं। ऐसे में जरूरत और निवेश के आधार पर सही विकल्प चुनना जरूरी है।

पीपीएफ पर लोनः कम ब्याज, लेकिन सीमित सुविधा

पीपीएफ पर लोन केवल एक निश्चित अवधि के दौरान ही लिया जा सकता है। खाता खुलने वाले वित्तीय वर्ष के तीसरे साल से लेकर छठे वित्तीय वर्ष तक ही यह सुविधा मिलती है। यदि पहले लिया गया लोन पूरी तरह चुका दिया गया हो, तभी अगला लोन लिया जा सकता है। लोन की अधिकतम राशि आवेदन से दो वित्तीय वर्ष पहले के खाते में उपलब्ध बैलेंस के केवल 25 प्रतिशत तक सीमित होती है। चूंकि पीपीएफ सरकार समर्थित बचत योजना है, इसलिए इस पर ब्याज भी कम लगता है। वर्तमान में पीपीएफ पर 7.1 प्रतिशत ब्याज मिलता है और लोन की ब्याज दर इससे केवल 1 प्रतिशत अधिक यानी लगभग 8.1 प्रतिशत है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये का लोन चाहिए तो उसके पीपीएफ खाते में लगभग 16 लाख रुपये का बैलेंस होना आवश्यक होगा, क्योंकि केवल 25 प्रतिशत राशि ही लोन के रूप में मिल सकती है।

म्यूचुअल फंड पर लोन : ज्यादा रकम और अधिक लचीलापन

म्यूचुअल फंड के बदले लोन निवेशकों के लिए अधिक लचीला विकल्प माना जाता है। यह सुविधा फिजिकल और डीमैट दोनों रूपों में रखी गई म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर उपलब्ध है। इसका लाभ व्यक्तिगत निवेशकों के अलावा एचयूएफ, कंपनियां, एलएलपी, ट्रस्ट और साझेदारी फर्में भी ले सकती हैं। इक्विटी, डेट, हाइब्रिड और लिक्विड फंड सभी पर लोन मिल सकता है, हालांकि लोन की सीमा फंड के प्रकार पर निर्भर करती है। डेट और लिक्विड फंड पर आमतौर पर 70 से 80 प्रतिशत तक लोन मिल जाता है, जबकि इक्विटी फंड पर यह सीमा लगभग 50 प्रतिशत रहती है। यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये की जरूरत है तो करीब आठ लाख रुपये के म्यूचुअल फंड निवेश के आधार पर यह राशि मिल सकती है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक की यूनिट्स बिकती नहीं हैं और वे बाजार में निवेशित बनी रहती हैं, जिससे लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण जारी रहता है।

ब्याज और जोखिम में बड़ा अंतर

म्यूचुअल फंड पर लोन की ब्याज दर आमतौर पर 9 से 12 प्रतिशत के बीच होती है। कई बैंक और वित्तीय संस्थान इसे ओवरड्राफ्ट सुविधा के रूप में देते हैं, जिसमें केवल इस्तेमाल की गई राशि पर ही ब्याज देना पड़ता है। हालांकि इसमें एक जोखिम भी है। यदि बाजार गिरता है और म्यूचुअल फंड की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) कम हो जाती है, तो बैंक अतिरिक्त सिक्योरिटी या आंशिक भुगतान की मांग कर सकता है। ऐसा नहीं करने पर गिरवी रखी गई यूनिट्स बेची भी जा सकती हैं।

किसके लिए कौन सा विकल्प बेहतर

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए, जो नियमित एसआईपी करते हैं और अच्छा म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो बना चुके हैं, म्यूचुअल फंड पर लोन बेहतर विकल्प माना जाता है। इससे निवेश टूटता नहीं और कंपाउंडिंग का लाभ भी जारी रहता है। स्वरोजगार या व्यवसाय करने वालों के लिए भी म्यूचुअल फंड पर लोन अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें बड़ी राशि अपेक्षाकृत जल्दी मिल सकती है।

एसआईएफ की बढ़ती लोकप्रियता से लंपसम निवेश को मिल रही है चुनौती

10 लाख की न्यूनतम निवेश सीमा के बावजूद एसआईएफ की ओर बढ़ा रुझान

जानकारी
बिजनेस डेस्क

विशेषज्ञों का कहना है कि पहले लॉन्ग-शॉर्ट निवेश रणनीति का लाभ केवल कैटेगरी-III अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड (एआईएफ) के माध्यम से ही मिल पाता था। लेकिन एआईएफ में निवेश की न्यूनतम सीमा एक करोड़ रुपये होती है, जो अधिकांश निवेशकों की पहुंच से बाहर है। इसके विपरीत एसआईएफ में केवल 10 लाख रुपये से निवेश संभव है। इससे संपन्न निवेशकों को कम पूंजी में वही निवेश रणनीति अपनाने का अवसर मिल रहा है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में एचएनआई निवेशक अब एसआईएफ को अपनाने लगे हैं।

म्यूचुअल फंड उद्योग में लंपसम निवेशकों के लिए एक नया विकल्प तेजी से उभर रहा है। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) की बढ़ती लोकप्रियता अब पारंपरिक इक्विटी म्यूचुअल फंडों के लंपसम निवेश को चुनौती देती दिखाई दे रही है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के महीनों में इक्विटी म्यूचुअल फंडों में लंपसम निवेश घटने के पीछे एसआईएफ की बढ़ती स्वीकार्यता भी एक अहम वजह हो सकती है। पिछले महीने इक्विटी म्यूचुअल फंडों में शुद्ध निवेश (नेट इनफ्लो) में करीब 40 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई, जबकि दूसरी ओर एसआईपी (एसआईपी) निवेश लगातार मजबूत बना रहा। इससे यह संकेत मिला कि छोटे निवेशक नियमित निवेश जारी रखे हुए हैं, जबकि बड़े निवेशक अब नए विकल्पों की तलाश कर रहे हैं।

सात माह में सात गुना बढ़ा एयूएम

पिछले वर्ष शुरू किए गए स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड्स ने बेहद कम समय में निवेशकों का भरोसा जीत लिया है। अक्टूबर 2025 में इनका एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) लगभग 2,010 करोड़ रुपये था, जो मई 2026 तक बढ़कर 13,814 करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया। यानी महज सात महीनों में इनका आकार लगभग सात गुना बढ़ गया। हालांकि एसआईएफ में निवेश के लिए न्यूनतम 10 लाख रुपये की सीमा तय की गई है, फिर भी हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (एचएनआई) निवेशकों में इसका आकर्षण लगातार बढ़ रहा है।

हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम पसंद

एसआईएफ के भीतर सबसे अधिक लोकप्रियता हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम को मिली है। मई 2026 तक इस श्रेणी में करीब 9,709 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो कुल एसआईएफ एसेट्स का लगभग 70 प्रतिशत है। इन योजनाओं में प्रति फोलियो औसत निवेश भी सबसे अधिक रहा। हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में औसत निवेश करीब 33.86 लाख रुपये प्रति फोलियो दर्ज किया गया। इसके मुकाबले इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में यह आंकड़ा 15.64 लाख रुपये और इक्विटी एक्स-टॉप-100 लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में 12.77 लाख रुपये रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि यह आंकड़ा बताता है कि संपन्न निवेशक इस नई श्रेणी पर तेजी से भरोसा जता रहे हैं।

क्यों बढ़ रही है एसआईएफ मांग

बाजार जानकारों के अनुसार एसआईएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह निवेशकों को बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न देने की कोशिश करता है। विशेष रूप से हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट रणनीति बाजार में गिरावट के दौरान भी नुकसान को सीमित रखने का प्रयास करती है। हालिया बाजार सुधार के दौरान इन योजनाओं ने सकारात्मक रिटर्न देकर निवेशकों का भरोसा और मजबूत किया है। यही वजह है कि कई निवेशक अब पारंपरिक लंपसम इक्विटी निवेश की जगह एसआईएफ को प्राथमिकता दे रहे हैं।

म्यूचुअल फंडों पर पड़ेगा असर?

विशेषज्ञों का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि एसआईएफ पारंपरिक म्यूचुअल फंडों का स्थान ले लेंगे। फिलहाल इसका प्रभाव मुख्य रूप से बड़े लंपसम निवेशकों तक सीमित है। एसआईपी निवेश में किसी प्रकार की कमजोरी देखने को नहीं मिली है। इससे स्पष्ट है कि खुदरा निवेशक अभी भी नियमित निवेश के लिए पारंपरिक म्यूचुअल फंडों पर भरोसा बनाए हुए हैं। हालांकि यदि एसआईएफ का प्रदर्शन लगातार बेहतर रहता है तो आने वाले वर्षों में बड़े निवेशकों का एक हिस्सा इस श्रेणी की ओर शिफ्ट हो सकता है।

किन निवेशकों के लिए बेहतर है एसआईएफ

विशेषज्ञों के अनुसार एसआईएफ उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिनके पास पहले से बड़ा निवेश पोर्टफोलियो है और जो बाजार की अस्थिरता के बीच बेहतर जोखिम प्रबंधन चाहते हैं। विशेष रूप से ऐसे निवेशक जो एकमुश्त बड़ी राशि निवेश करते हैं और केवल इक्विटी पर निर्भर नहीं रहना चाहते, उनके लिए यह एक बेहतर विकल्प बन सकता है। इसके अलावा फिक्स्ड इनकम निवेशक, जो सीमित जोखिम के साथ अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न चाहते हैं, वे भी भविष्य में इस श्रेणी की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

अभी भी कई चुनौतियां बाकी

हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एसआईएफ को व्यापक स्तर पर लोकप्रिय होने में अभी समय लगेगा। निवेशकों में जागरूकता बढ़ाने, वितरकों को प्रशिक्षित करने और लंबी अवधि का प्रदर्शन रिकॉर्ड तैयार होने के बाद ही यह श्रेणी बड़े पैमाने पर स्वीकार की जाएगी। निवेशकों के लिए यह भी जरूरी होगा कि वे केवल शुरुआती प्रदर्शन देखकर निवेश न करें, बल्कि फंड की रणनीति, जोखिम, शुल्क और अपने वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लें।

लंबी अवधि में बदल सकता है निवेश का परिदृश्य

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय निवेश उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। जैसे-जैसे निवेशकों की समझ बढ़ेगी, वे पारंपरिक इक्विटी और डेट फंडों से आगे बढ़कर नई निवेश रणनीतियों को भी अपनाएंगे। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड इसी बदलाव का संकेत हैं। यदि इनका प्रदर्शन स्थिर और बेहतर बना रहता है तो आने वाले वर्षों में यह हाई नेटवर्थ निवेशकों के पोर्टफोलियो का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं। हालांकि खुदरा निवेशकों के लिए एसआईपी आधारित म्यूचुअल फंड अभी भी सबसे सरल, अनुशासित और प्रभावी निवेश विकल्प बने हुए हैं।

20 साल की एसआईपी में सिर्फ पांच फंड ही बने असली 'वेल्थ क्रिएटर'

बिजनेस डेस्क। म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों का सपना होता है कि उन्हें लंबे समय तक लगातार बेहतर रिटर्न मिले। हालांकि, ऐसा करने वाले फंड बहुत कम हैं। करीब 600 सक्रिय इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के विश्लेषण में केवल पांच ऐसी योजनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने 3, 5, 10, 15 और 20 वर्ष जैसी सभी प्रमुख निवेश अवधियों में 15 प्रतिशत से अधिक सालाना एसआईपी रिटर्न दिया है। यह विश्लेषण वैल्यू रिसर्च के 29 जून 2026 तक के आंकड़ों पर आधारित है। सबसे खास बात यह है कि इस सूची में कोई भी फ्लेक्सी-कैप या लार्जकैप फंड शामिल नहीं है। दो मिडकैप, दो हेल्थकेयर और एक इंफ्रास्ट्रक्चर थीम आधारित फंड ने निवेशकों को लंबी अवधि में शानदार संपत्ति बनाने का अवसर दिया। यह दर्शाता है कि मजबूत सेक्टरों में लंबे समय तक धैर्य के साथ निवेश करने वाले निवेशकों को बेहतरीन रिटर्न मिला।

ये हैं पांच सबसे सफल एसआईपी फंड

- इस सूची में एचएसबीसी मिडकैप फंड (रेगूलर) पहले स्थान पर है। इस फंड ने 3 वर्ष में 20.05%, 5 वर्ष में 21.46%, 10 वर्ष में 18.39%, 15 वर्ष में 18.96% और 20 वर्ष में 17.70% का वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया। निवेशक ने 20 वर्षों तक हर महीने 10,000 की एसआईपी की होती, तो उसका निवेश बढ़कर 1.86 करोड़ हो जाता।
- दूसरे स्थान पर एसीबीआई हेल्थकेयर ऑपर्च्युनिटी फंड (रेगूलर) रहा। इसने 20 वर्षों में 16.80 प्रतिशत वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया और 10,000 मासिक निवेश को लगभग 1.68 करोड़ रुपये में बदल दिया।
- तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मिडकैप फंड रहा। इस फंड ने 20 वर्षों में 16.52 प्रतिशत का रिटर्न दिया और लगभग 1.61 करोड़ का कोष तैयार किया।
- चौथे स्थान पर यूटीआई हेल्थकेयर म्यूचुअल फंड (रेगूलर) रहा, जिसने 20 वर्षों में 15.61 प्रतिशत रिटर्न देते हुए 10,000 की मासिक एसआईपी को लगभग 1.45 करोड़ रुपये तक पहुंचाया।
- पांचवें स्थान पर डीएसपी इंडिया टीआईजीईआर फंड (रेगूलर) रहा। इंफ्रास्ट्रक्चर थीम पर आधारित इस फंड ने 20 वर्षों में 15.40 प्रतिशत रिटर्न दिया और निवेशकों का कोष करीब 1.40 करोड़ रुपये तक पहुंचा दिया।

अमेरिकी ब्याज दरों, ट्रेजरी यील्ड और वैश्विक अनिश्चितता से बढ़ा दबाव

सात माह के निचले स्तर पर सोना-चांदी, ऐसे में क्या करें निवेशक

बिजनेस डेस्क

जुलाई की शुरुआत सर्राफा बाजार के लिए झटके भरी रही। 1 जुलाई को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड में तेजी, फेडरल रिजर्व की सख्त मौद्रिक नीति के संकेत और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। इसका असर यह हुआ कि सोना और चांदी दोनों सात महीने के निचले स्तर के करीब पहुंच गए। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह गिरावट केवल नकारात्मक संकेत नहीं है, बल्कि लंबी अवधि के निवेशकों के लिए अवसर भी बन सकती है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना 1,701 रुपये यानी 1.19 प्रतिशत टूटकर करीब 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। वहीं सितंबर डिलीवरी वाली चांदी में और बड़ी गिरावट देखने को मिली। चांदी 5,380 रुपये यानी 2.35 प्रतिशत लुढ़ककर 2.23 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी कमजोरी का यही रुख दिखाई दिया। कॉमेक्स पर सोना करीब 4,000 डॉलर प्रति औंस के महत्वपूर्ण स्तर के आसपास सात महीने के निचले स्तर पर कारोबार करता रहा, जबकि चांदी लगभग तीन प्रतिशत गिरकर 57.73 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गई।

अमेरिकी फेड की सख्ती बनी सबसे बड़ी वजह

बाजार विशेषज्ञों के अनुसार इस गिरावट की सबसे बड़ी वजह अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व का सख्त रुख है। हाल के दिनों में फेड अधिकारियों ने संकेत दिए हैं कि यदि महंगाई पूरी तरह नियंत्रण में नहीं आती है तो इस वर्ष के अंत तक ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी की जा सकती है। ब्याज दरें बढ़ने से निवेशकों का रुझान सोने जैसी बिना ब्याज वाली परिसंपत्तियों से हटकर बॉन्ड और अन्य ब्याज देने वाले निवेश विकल्पों की ओर बढ़ जाता है। यही कारण है कि सोने और चांदी पर बिकवाली का दबाव लगातार बना हुआ है।

ट्रेजरी यील्ड और मजबूत डॉलर का असर

अमेरिकी सरकारी बॉन्ड यानी ट्रेजरी की यील्ड में तेजी ने भी सोने की चमक फीकी कर दी है। जब ट्रेजरी यील्ड बढ़ती है तो निवेशकों को सुरक्षित और बेहतर रिटर्न वाले विकल्प मिलने लगते हैं। इससे सोने की मांग घटती है। इसके साथ ही डॉलर इंडेक्स में मजबूती आने से भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की कीमतों पर दबाव बढ़ा। चूंकि सोने का कारोबार डॉलर में होता है, इसलिए डॉलर मजबूत होने पर अन्य देशों के निवेशकों के लिए सोना महंगा हो जाता है और मांग कमजोर पड़ जाती है।

मध्य-पूर्व में बढ़ता तनाव भी चिंता का कारण

मध्य-पूर्व में एक बार फिर बढ़ते तनाव ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है। ईरान और अमेरिका के बीच रिश्तों में आई तल्खी तथा शांति वार्ता को लेकर अनिश्चितता ने निवेशकों को सतर्क बना दिया है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में ऐसे तनाव के दौरान सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है, लेकिन इस समय ब्याज दरों और डॉलर की मजबूती का प्रभाव अधिक देखने को मिल रहा है। इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भी वैश्विक महंगाई को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। यदि तेल महंगा होता है तो महंगाई बढ़ सकती है, जिससे केंद्रीय बैंक ब्याज दरें लंबे समय तक ऊंची रख सकते हैं।

विशेषज्ञ बोले- जल्दबाजी नहीं, रणनीति के साथ ही करें निवेश

अब अमेरिकी आंकड़ों पर टिकी नजर

बाजार की अगली दिशा काफी हद तक अमेरिका से आने वाले आर्थिक आंकड़ों पर निर्भर करेगी। निवेशकों की नजर जून के **ADP** रोजगार आंकड़ों और नॉन-फार्म पेरोल डेटा पर है। यदि रोजगार के आंकड़े मजबूत आते हैं तो फेड के लिए ब्याज दरें ऊंची बनाए रखने का आधार मजबूत होगा, जिससे सोने पर दबाव बना रह सकता है। वहीं, यदि आंकड़े उम्मीद से कमजोर आते हैं तो ब्याज दरों में नरमी की उम्मीद बढ़ेगी और सोना-चांदी में रिकवरी देखने को मिल सकती है।

विशेषज्ञों की रायः अभी सतर्कता जरूरी

सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि फिलहाल तकनीकी रूप से सोना और चांदी दोनों कमजोर स्थिति में हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,000 डॉलर प्रति औंस के स्तर से नीचे बना रहता है तो अगला मजबूत सपोर्ट 3,600 डॉलर प्रति औंस के आसपास दिखाई देता है। इसी तरह चांदी यदि 60 डॉलर प्रति औंस के नीचे टिकती है तो इसमें 50 डॉलर प्रति औंस तक गिरावट की संभावना बनी रह सकती है। हालांकि लगातार बिकवाली के कारण दोनों धातुएं अब ओवरसोल्ड जोन में पहुंच चुकी हैं। ऐसे में किसी भी सकारात्मक वैश्विक संकेत या कमजोर अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों के बाद तेज तकनीकी रिकवरी भी संभव है।

क्या यह खरीदारी का सही समय है?

विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेशकों को घबराने की जरूरत नहीं है। यदि किसी का निवेश लक्ष्य पांच से दस वर्ष या उससे अधिक का है तो ऐसी गिरावट चरणबद्ध निवेश (स्टैगर्ड इन्वेस्टमेंट) का अवसर बन सकती है। एकमुश्त निवेश करने के बजाय किस्तों में खरीदारी करना अधिक सुरक्षित रणनीति मानी जा रही है। इससे यदि कीमतें और गिरती हैं तो औसत खरीद मूल्य कम किया जा सकता है। वहीं अल्पकालिक ट्रेडर्स को फेडरल रिजर्व के अगले संकेत, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, डॉलर इंडेक्स और वैश्विक घटनाक्रमों पर लगातार नजर बनाए रखनी चाहिए।

दीर्घकाल में बनी रहेगी सोने की अहमियत

सोना सदियों से महंगाई, आर्थिक संकट और वैश्विक अनिश्चितताओं के दौरान सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्प माना जाता रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अल्पकाल में कीमतों में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, लेकिन लंबी अवधि में सोना निवेश पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का महत्वपूर्ण माध्यम बना रहेगा। यही कारण है कि वित्तीय सलाहकार कुल निवेश का एक हिस्सा सोना और चांदी जैसी कीमती धातुओं में रखने की सलाह देते हैं। मौजूदा गिरावट को केवल कमजोरी के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक निवेश के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। हालांकि किसी भी निवेश निर्णय से पहले अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय सलाहकार की राय को जरूर ध्यान में रखना चाहिए।

शहर में चरमराई सीवरेज व्यवस्था, बदबूदार माहौल से परेशान हैं शहरवासी

गली-मोहल्लों और प्रमुख बाजारों में दूषित पानी सड़कों पर बह रहा

सैकड़ों छात्राओं को गंदे पानी से होकर गुजरना पड़ता है रोजाना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शहर की सीवरेज व्यवस्था इन दिनों चरमराई हुई नजर आ रही है। विभिन्न गली-मोहल्लों और प्रमुख बाजारों में सीवरेज जाम होने तथा लीकेज के कारण दूषित पानी सड़कों पर बह रहा है, जिससे लोगों का आवागमन प्रभावित हो रहा है। लोगों को बदबूदार माहौल में रहने को मजबूर होना पड़ रहा है। शहरवासियों ने जिला प्रशासन से समस्या के समाधान की मांग की है। मंडी मोहल्ला की एक गली में जहां कई दिनों सीवरेज का गंदा पानी ओवरफ्लो होकर सड़क पर बह रहा है।

इसी गली में महिला महाविद्यालय होने के कारण सैकड़ों छात्राओं को रोजाना गंदे और बदबूदार पानी के बीच से होकर गुजरना पड़ता है। गली में दो स्थानों पर सीवरेज लीकेज की समस्या बनी हुई है। लोगों ने बताया कि करीब एक माह से यह समस्या बनी हैं। सुबह पेयजल सप्लाई के दौरान स्थित और अधिक गंभीर हो जाती है। सीवरेज से निकलकर दूषित पानी सड़क पर फैल जाता है। सप्लाई जाने के बाद पानी का रिसाव कम होता है। घर के सामने रिसते सीवरेज के कारण वे पूरा दिन बदबूदार माहौल में रहने को मजबूर हैं। वहीं सिलानी गेट की ओर जाने वाले बाजार में भी सीवरेज से लगातार दूषित पानी निकल रहा है। दुकानदारों को पूरे दिन दुर्गंध का सामना करना पड़ रहा है। भट्टी गेट क्षेत्र में कई माह बीतने के बाद भी सीवरेज व्यवस्था पूरी तरह सुचारू नहीं हो पाई है। बेरी गेट, कानूनगो मौहल्ला और डिफेंस कॉलोनी, गोपाल मंदिर के नजदीक सहित कई क्षेत्रों में भी ऐसी ही स्थिति बनी हुई है। शहरवासियों का कहना है कि यदि जल्द प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो बरसात के मौसम में स्थिति और गंभीर हो सकती है। लोगों ने जिला प्रशासन से सीवरेज व्यवस्था को दुरुस्त कर समस्या से राहत दिलाने की मांग की है।

झज्जर। सीवरेज से निकलता गंदा पानी। फोटो : हरिभूमि

सिलानी गेट क्षेत्र में चला नाला सफाई अभियान, दुकानदारों को मिली राहत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

बरसात के मौसम को देखते हुए जलभराव की समस्या से निपटने और पानी निकासी व्यवस्था सुचारू बनाने के उद्देश्य से शनिवार को नगर परिषद द्वारा सिलानी गेट क्षेत्र में नाला सफाई अभियान चलाया गया। अभियान के अंतर्गत जेसीबी मशीन की सहायता से नाले की सफाई कर उसमें जमा गाद और मलबे को बाहर निकाला गया। स्थानीय दुकानदारों ने नगर परिषद की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि लंबे समय से नाले की सफाई की आवश्यकता महसूस की जा रही थी।

जलभराव से मुक्ति मिलेगी

दुकानदार सुमित, राजकुमार, हरिओम, छोटेलाल सैनी, रोहित गर्ग, चिराग, मनीष कुमार आदि ने बताया कि जेसीबी मशीन के माध्यम से नाले की सफाई का कार्य तेजी से पूरा हुआ, जिससे आगामी दिनों में बरसाती पानी की निकासी बेहतर ढंग से हो सकेगी। उन्होंने इस बात पर भी संतोष व्यक्त किया कि नगर परिषद ने सफाई अभियान के लिए शनिवार का दिन चुना। उनका कहना है कि रविवार को अधिकांश दुकानें बंद रहने के कारण नाले से निकाला गया मलबा सूख जाएगा और उसके बाद उसे आसानी से उठाया जा सकेगा। इससे क्षेत्र में स्वच्छता बनाए रखने के साथ-साथ यातायात और व्यापारिक गतिविधियों पर भी कम प्रभाव पड़ेगा।

झज्जर। सिलानी गेट क्षेत्र में नालों की सफाई करके बाहर निकाला गया मलबा।

पंचायत को लेकर लाइनपार में किया जनसंपर्क

बहादुरगढ़। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के कार्यकर्ता रामकिशन, हवा सिंह, कृष्ण कुमार व अजीत सिंह ने रोहतक में होने वाली महापंचायत को लेकर लाइनपार के 22 फुटा रोड, सुभाष नगर व शंकर गार्डन में जनसंपर्क अभियान चलाया। महापंचायत दिहाड़ी बढ़ाने, बिजली का निजीकरण रोकने, भारत अमेरिका ट्रेड डील नहीं करने, किसानों के लिए एमएमपी गारंटी कानून बनाने, फसल खराबा 50 हजार रुपए प्रति एकड़ देने, कर्जामाफी करने, बुढ़ापा पेंशन 10 हजार प्रति माह करने आदि मांग को जोरशोर से उठाया जाएगा। इस मौके पर रमेश, बृजमोहन, सौरभ, राजवंती, श्यामलाल व हरिशंकर आदि मौजूद रहे।

गांव खरहर में विद्यार्थियों को किया जागरूक

बहादुरगढ़। शनिवार को गांव खरहर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग द्वारा निःशुल्क योग-प्राणायाम शिविर का आयोजन किया गया। स्कूल प्राचार्या डॉ रीतू चोपड़ा की की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में शिक्षक अरुण, कविता, बिजेंद्र, सुदेश, सुमन, वनीता, रविंद्र आर्य समेत विद्यार्थियों ने भाग लिया। योगाचार्य जगदीश सहवाग ने अष्टांग योग के अतिरिक्त देशभक्ति, माता-पिता की सेवा, प्रकृति संरक्षण तथा शिक्षा के महत्व आदि विषयों पर विद्यार्थियों को जागरुक कियया। डॉ रीतू चोपड़ा तथा योगाचार्य जगदीश ने बच्चों को नशे, फास्ट-जंक फूड और सामाजिक बुराईयों से दूर रहने की अपील की।

14 से पहले गणना फार्मों के डिजिटलाइजेशन करें

झज्जर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले की चारों विधानसभा क्षेत्रों में गणना अभियान के तहत वोटर से हस्ताक्षर युक्त गणना फार्म संग्रहण और डिजिटलाइजेशन का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है, ऐसे में राजनीतिक दलों के बीएलए और आमजन बीएलओ का सहयोग करें। यह जानकारी डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने दी। उन्होंने सभी राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से आह्वान किया है कि जिले में चल रहे मतदाता सूचियों के एसआईआर कार्यक्रम के अनुसार अपने बूथ लेवल एजेंटस की बूथ लेवल अधिकारियों के साथ बैठकें आयोजित करें। मतदाता सूचियों का यह विशेष गहन पुनरीक्षण 14 जुलाई तक जारी रहेगा। मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन 22 सितंबर को होना निर्धारित किया गया है।

दादनपुर स्कूल में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत किया जागरूक

■ नशा परिवार और समाज का भविष्य करता है प्रभावित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दादनपुर में कक्षा छठी से नौवीं तक के विद्यार्थियों के लिए पोस्टर एवं स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा समाज को नशा मुक्त बनाने के लिए जन-जन तक सकारात्मक संदेश पहुंचाना रहा। विद्यार्थियों ने अपने संदेशों के माध्यम से सभी को नशे से दूर रहने तथा स्वस्थ एवं जिम्मेदार जीवन अपनाने का आह्वान किया। विद्यालय परिसर विद्यार्थियों की आकर्षक कलाकृतियों और प्रेरणादायी नारों से सुसज्जित दिखाई दिया। प्राचार्य जयप्रकाश यादव ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि नशा केवल व्यक्ति का ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज का भविष्य प्रभावित करता है। आज के विद्यार्थी यदि जागरूक बनकर समाज को सही दिशा देंगे, तो नशा मुक्त भारत का सपना अवश्य साकार होगा।

झज्जर। प्रतियोगिता के दौरान पोस्टर हाथ में लिए हुए विद्यार्थी।

इलेक्ट्रोनिक्स उपकरण की दुकान से सामान चोरी, मामला दर्ज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

क्षेत्र के गांव बिरोहड़ में एक इलेक्ट्रोनिक्स उपकरण से संबंधित दुकान में चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया। दुकान मालिक ने जब दुकान पर पहुंचा तो चोरी का पता चला। चोर दुकान में रखी बैट्री, इंवर्टर, पंखें, एलईडी चुरा ले गए। पुलिस को दी शिकायत में पीड़ित महेंद्र ने बताया कि उसने मेन रोड पर दुकान कर रखी है। वह दुकान पर इन्वर्टर बैट्री रिपेयरिंग का कार्य करता है तथा इलेक्ट्रोनिक्स उपकरण विक्रेता है। रात के समय वह दुकान को बंद करके अपने घर चला गया था। सुबह दुकान पर पहुंचने पर देखा कि दुकान का ताला टूटा हुआ था और शटर खुला था। जब उसने अंदर पहुंच कर चोरी हुए सामान का जायजा लिया तो पता चला कि उसकी दुकान से करीब दो से ढाई लाख रुपये के उपकरण चोरी हो गए। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

झज्जर। बिजली उपकरण की दुकान जहां से चोरी हुआ सामान।

भारत केसरी मौसम खत्री को दी बधाई

बहादुरगढ़। भारत केसरी पहलवान मौसम खत्री को पिता बनने पर बुल्लड़ पहलवान ने शुभकामनाएं देते हुए नवजात शिशु के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। बुल्लड़ पहलवान ने कहा कि मौसम खत्री ने अपनी कड़ी मेहनत के दम पर देशभर में पहचान बनाई है तथा हरियाणा पुलिस में डीएसपी के पद तक पहुंचे हैं। उन्होंने पिछले दिनों गुरुग्राम में हुए देश के अब तक के सबसे बड़े एक करोड़ रुपये के सरकारी इनामी दंगल का खिताब जीतकर हरियाणा का गौरव बढ़ाया था। बुल्लड़ पहलवान ने उम्मीद जताई कि अभिमन्यु बड़ा होकर अपने पिता मौसम खत्री से भी बड़ा पहलवान बनेगा।

डीसी ने विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित कर मेहनत करने का दिया संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शनिवार को डीसी वर्षा खांगवाल ने ज्ञान चंद पब्लिक स्कूल का दौरा किया। उन्होंने विद्यार्थियों से आत्मीय संवाद कर उन्हें जीवन में बड़े लक्ष्य निर्धारित करने, अनुशासन, आत्मविश्वास एवं निरंतर परिश्रम के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। विद्यालय निदेशक जय विकास ने बताया कि डीसी ने विद्यार्थियों को स्पोकन इंग्लिश के महत्व से अवगत कराते हुए कहा कि वर्तमान समय में प्रभावशाली संवाद क्षमता सफलता की महत्वपूर्ण कुंजी है।

उन्होंने प्रेरणादायक प्रसंगों के माध्यम से विद्यार्थियों को सत्य, कर्त्तव्य, धैर्य, नेतृत्व क्षमता एवं सही निर्णय लेने का संदेश दिया। उन्होंने नीट अभ्यर्थियों से विशेष रूप से मुलाकात करते हुए उन्हें कठिन परिश्रम, समय प्रबंधन और आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की तैयारी करने के लिए प्रेरित किया। जिला शिक्षा अधिकारी रतिंदर सिंह ने भी विद्यार्थियों को शिक्षा के महत्व, अनुशासन एवं निरंतर अध्ययन के लिए प्रेरित किया तथा उन्हें अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया। इस मौके पर प्रिया नांदल व शिल्पा ने डीसी को शॉल एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

■ डीसी वर्षा खांगवाल ने ज्ञान चंद स्कूल का दौरा किया

झज्जर। विद्यार्थियों से संवाद करते हुए डीसी वर्षा खांगवाल।

स्टेशन से चोरी की एलईडी के साथ आरोपी पकड़ा

बहादुरगढ़। चोरी का सामान बेचने की नीयत से लेकर घूम रहे एक आरोपी को रेलवे पुलिस बहादुरगढ़ ने स्टेशन परिसर से काबू किया। आरोपी से 2 कंपनियों की 2 एलईडी बरामद हुई। आरोपी को हिरासत में ले लिया गया। उसके खिलाफ जीआरपी थाने में संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज किया गया है।

एलईडी के बिल और दस्तावेज पेश नहीं कर सका आरोपी युवक

दरअसल, बीती सायं जीआरपी टीम चेकिंग कर रही थी। इस दौरान स्टेशन के गेट के निकट पुलिस को 1 संदिग्ध युवक नजर आया। उसके पास 2 एलईडी टीवी थे। टीम ने शक के आधार पर काबू कर उससे पूछताछ की। एलईडी के बिल आदि दस्तावेज मांगें तो वह कुछ पेश नहीं कर सका। आरोप है कि जब उससे सख्ती से पूछताछ तो उसने बताया कि ये एलईडी एक कंपनी से चुराई गई हैं और इसे बेचने के लिए ले जा रहा था। इस पर टीम ने आरोपी को हिरासत में लिया और उसके खिलाफ केस दर्ज कर आगामी कार्रवाई शुरू की।

विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभाव के प्रति चेताया

निरीक्षक सतीश कुमार ने छात्रों को नशे से दूर रहने की शपथ दिलवाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

जिला पुलिस द्वारा चलाए जा रहे जन-जागरूकता अभियान के तहत एमबीडी इंटरनेशनल स्कूल बेरी में नशा मुक्ति टीम द्वारा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में निरीक्षक सतीश कुमार ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि नशा व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार और भविष्य को बर्बाद कर देता है। उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहने तथा दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करने का आह्वान किया।

उन्होंने विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने, डायल-112 आपातकालीन सेवा का सही उपयोग करने तथा साइबर अपराधों से बचाव के उपायों की जानकारी दी। उन्होंने ऑनलाइन ठगी, फर्जी लिंक, अज्ञात कॉल, ओटीपी एवं बैंक संबंधी गोपनीय जानकारी किसी के साथ साझा न करने की सलाह दी। इसके अलावा साइबर धोखाधड़ी होने पर तुरंत राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज कराने तथा मानस हेल्पलाइन 1933 के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य एवं परामर्श संबंधी सहायता प्राप्त करने की जानकारी भी दी। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने नशामुक्त, साइबर एवं सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने का संकल्प लिया।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को जागरूक करते हुए पुलिस टीम।

सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बंद करने का आह्वान

लोगों को वितरित किए जूट बैग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर जिला एडीआर सेंटर में जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सेंटर में आने वाले नागरिकों को जुट के बैग वितरित कर सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बंद करने का आह्वान किया गया। सीजेएम विशाल ने बताया कि इस दिवस का उद्देश्य लोगों को सिंगल यूज प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर पर्यावरण संरक्षण में जनभागीदारी बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बैग पर्यावरण जल स्त्रोतों, भूमि और वन्य जीवों के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। बढ़ते प्लास्टिक के उपयोग से प्रदूषण के साथ मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक को प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े, जूट या अन्य पर्यावरण अनुकूल सामग्री से बने बैग अपनाने चाहिए। उन्होंने उपस्थित जनसमूह से कहा कि खरीदारी के लिए घर से ही थैला लेकर निकलने की आदत प्लास्टिक कचरा कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस मौके पर क्लर्क संजय, आकाश, सोमबीर, अभिषेक, पैरा लीगल वालंटियर कर्मजीत छिल्लर, ओमप्रकाश शर्मा सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

झज्जर। एडीआर सेंटर में जूट बैग के साथ उपस्थित प्रबुद्धजन।

विद्यार्थियों को किया यातायात के नियमों के प्रति जागरूक

■ ड्राइविंग करते वक्त फोन का प्रयोग न करें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शनिवार को मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। यातायात थाना प्रभारी सतीश कुमार ने विद्यार्थियों व स्कूल स्टाफ को यातायात नियमों की जानकारी दी।

इंस्पेक्टर सतीश ने बताया कि वाहन चलाते समय हेलमेट और सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करें, निर्धारित गति सीमा का पालन करें, नशे की हालत में वाहन न चलाएं। ड्राइविंग करते वक्त मोबाइल के इस्तेमाल से बचें। यातायात नियमों का पालन करके सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने परिवार व आसपास के लोगों को भी यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने का आह्वान किया। इस अवसर पर स्कूल संचालक राकेश सिंह, प्रिंसिपल मोना, शिक्षक प्रवीण, मुकेश तथा स्टाफ उपस्थित रहा। सभी ने सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया।

बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को जागरूक करते इंस्पेक्टर सतीश कुमार।

कॉल करके युवक को अड्डे पर बुलाया और बेरहमी से पीटा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

मातन में युवक को फोन करके बुलाया गया और उस पर डंडों से हमला कर दिया गया। हमले में उसे काफी चोट आई। उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मातन के सागर का कहना है कि कुछ समय पहले उसने अपने एक दोस्त के नाम पर बाइक ली थी। उसकी किश्त अब भी भर रहा हूं। हाल ही में मैंने अपने दोस्त विकास से आरसी व नंबर प्लेट मांगी तो उसने इंकार कर दिया। एक जुलाई को गांव के एक युवक का मेरे पास फोन आया और बोला कि तुम्हारा दोस्त तुम्हे आरसी व नंबर प्लेट नहीं देगा। फिर अड्डे पर मिलने के लिए बुलाया। अड्डे पर पहुंचा तो वह कॉलर अपने 3 साथियों के साथ वहां मौजूद था। चारों ने डंडों से हमला कर दिया। भागने लगा तो पकड़कर बेरहमी से पीटा। इसके बाद जान से मारने की धमकी देकर चले गए। परिजनों ने बहादुरगढ़ के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। उधर, पुलिस का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

सूचना

मैं, श्रीमति अनुराधा पत्नी अमित सिंह निवासी वार्ड नंबर-2, मकान नंबर 1375, पटेल पार्क, लाईनपार, बहादुरगढ़, तहसील बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करती हूं कि मेरा पुत्र साहिल सिंह व पुत्रवधु स्वेता मेरे कहने-सुनने से बाहर हैं। इसलिये मैं इनको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करती हूं। इनसे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

झज्जर। आंबेडकर चौक पर साफ-सफाई करते हुए जिला टॉस्क फोर्स मेंबर रत्न सागर। फोटो: हरिभूमि

विशेष स्वच्छता अभियान चलाकर किया जागरूक

झज्जर। स्वच्छ भारत मिशन हरियाणा के कार्यकारी वाइस चेयरमैन सुभाष चंद्र के जन्मदिन के उपलक्ष्य में शहर में विशेष स्वच्छता अभियान चलाकर चौक-चौराहों की साफ-सफाई की गई। जिला टॉस्क फोर्स मेंबर रत्न सागर, जिला व्यापार मंडल के अध्यक्ष केशव सिंघल, प्रदीप आदि ने अन्य सदस्यों, सफाई कर्मचारियों तथा स्थानीय नागरिकों के साथ मिलकर आंबेडकर चौक व आसपास के क्षेत्र की सफाई की। उन्होंने अन्य लोगों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि जन-जन का आंदोलन है, जिसमें प्रत्येक नागरिक की सहयोग आवश्यक है।

एकमुश्त निपटान योजना व्यापारियों के लिए लाभकारी

झज्जर। हरियाणा सरकार द्वारा छोटे व्यापारियों को लाभ देने के लिए शुरू की गई एकमुश्त निपटान स्कीम को व्यापारियों ने प्राथमिकता देते हुए उसका लाभ उठाया है। सरकार ने एक बार फिर निपटान योजना लागू की है। व्यापारी वर्ग नियमानुसार इस योजना का लाभ उठाकर पुराने बकाया करों का भुगतान सकते हैं। यह जानकारी डीसी वर्षा खांगवाल ने दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा गत 1 जून से 28 सितंबर तक एक मुश्त निपटान स्कीम शुरू की है। जिसके तहत सात कराधान अधिनियमों के तहत निर्धारित बकाया देय राशि के निपटान का प्रावधान है।

बार प्रधान छिल्लर को मातृशोक

बहादुरगढ़। बार एसोसिएशन के प्रधान रविन छिल्लर की मां निर्मला देवी का शुक्रवार को निधन हो गया। करीब 70 वर्षीय निर्मला देवी ने शुक्रवार सुबह घर में ही अंतिम सांस ली। गांव बराही में ही उनकी अंत्येष्टि की गई। उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होकर बहादुरगढ़ के अधिकांश अधिवक्ताओं ने उनके निधन पर शोक जताया।

सेक्टर-5 में 11 वर्ष पहले 25 करोड़ रुपये में तैयार हुए थे बहुमंजिला फ्लैट

आवंटन के अभाव में अब खंडहर हो गए 696 फ्लैट

निर्माण के दौरान एजेंसी और प्राधिकरण में हो गया टकराव

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

▶▶ प्राधिकरण की तकनीकी शाखा ने इसका कंप्लीशन सर्टिफिकेट संपदा कार्यालय को नहीं दिया। हालांकि प्राधिकरण ने इनके अलॉटमेंट के लिए विज्ञापन भी जारी किया था। इसके आधार पर प्रदेश के अलग-अलग इलाकों से आवेदन भी आए थे, लेकिन आवंटन प्रक्रिया पूरी नहीं हुई और अब ये फ्लैट खंडहर बन चुके हैं।

सिटी पल्स

करीब 11 साल पहले शहर के सेक्टर-5 में गरीब परिवारों के लिए जवाहरलाल नेहरू शहरी मिशन के तहत 696 फ्लैट बनाए गए थे, लेकिन आवंटन नहीं होने के कारण करीब 25 करोड़ की लागत से बनाए गए 696 फ्लैट अब खंडहर में तब्दील हो चुके हैं।

हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा 11 साल पहले सेक्टर-5 में 696 फ्लैट बनाए गए थे। सैनिक नगर के नजदीक करीब 24 करोड़ 90 लाख रुपए की लागत की परियोजना तैयार हुई थी. लेकिन निर्माण के दौरान एजेंसी और प्राधिकरण में टकराव हो गया। कॉन्ट्रेक्टर द्वारा इसे लेकर केस भी किया गया था। प्राधिकरण की तकनीकी शाखा ने इसका कंप्लीशन सर्टिफिकेट संपदा कार्यालय को नहीं दिया। हालांकि प्राधिकरण ने इनके अलॉटमेंट के लिए विज्ञापन भी जारी किया था। इसके आधार पर प्रदेश के अलग-अलग इलाकों से आवेदन भी आए थे, लेकिन आवंटन प्रक्रिया पूरी नहीं हुई और अब ये फ्लैट खंडहर बन चुके हैं।

बहादुरगढ़। सेक्टर-5 में खंडहर बने गरीबों के लिए बनाए फ्लैट्स। फोटो: हरिभूमि

प्रशासन को विकास परियोजनों के क्रियान्वयन की तरफ देना चाहिए ध्यान

लोकेश जांगड़ा के अनुसार गरीबों के उत्थान के नाम पर करोड़ों रुपए की धनराशि को बर्बाद करने का यह बेहतरीन सरकारी उदाहरण है। आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की रिहायश के लिए सेक्टर-5 में 696 फ्लैटों का निर्माण करवाया गया था। इस योजना के तहत गरीबों को बेहतर आवासीय सुविधाएं उपलब्ध करवाने का प्रावधान था। लेकिन आवंटन और देखरेख के अभाव में यहां ऊंची घास और गंदगी शासन-प्रशासन की आशियाना स्कीम को मुंह चिढ़ा रही है। शासन प्रशासन को विकास परियोजनों के क्रियान्वयन की तरफ ध्यान देना चाहिए।

सरकारी कार्यशैली में व्याप्त घोर लापरवाही की भेंट चढ़ी परियोजना

हरीश कुमार ने बताया कि गरीब लोगों का जीवनस्तर सुधारने व उन्हें विकास की मुख्यधारा में जोड़ने के लिए यह सारी कवायद की जा रही थी, लेकिन यह परियोजना सरकारी कार्यशैली में व्याप्त घोर लापरवाही की भेंट चढ़ गई। बीते 11 सालों में यह बहुमंजिला इमारत नशेड़ियों व अराजक तत्वों का ठिकाना बनी रही। यहां लगे दरवाजे व खिड़की आदि भी चोरी हो चुके हैं। सरकार को इसका समय पर आवंटन करना चाहिए था। स्लम के पुर्नवास के लिए बनाई गई योजनाओं का हश्र ऐसा होना बेहद तकलीफदायी है।

प्रशासनिक बेरुखी से सैकड़ों गरीब आशियाना पाने से रह गए वंचित

सतपाल राठी ने बताया कि केंद्रीय आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्रालय द्वारा गरीबों को बेहतर आवासीय सुविधा उपलब्ध करवाने के मद्देनजर वर्ष 2006 में जवाहरलाल नेहरू शहरी मिशन कार्यक्रम शुरू किया गया था। इसका आखिरी चरण 2012 तक चला था। हालांकि केंद्र सरकार ने बाद में इसे राजीव गांधी आवास योजना के नाम से आगे बढ़ाया था। गरीब लोगों को शहरों में आवासीय सुविधा उपलब्ध करवाना इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य था, लेकिन प्रशासनिक बेरुखी से सैकड़ों गरीब आशियाना पाने से वंचित रह गए।

बहादुरगढ़। पीटीएम के दौरान मॉडलों का प्रदर्शन करते विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

जूपिटर में लगाई मॉडलों की प्रदर्शनी

बहादुरगढ़। रोहद स्थित जूपिटर पब्लिक स्कूल में अभिभावक-अध्यापक मीटिंग के दौरान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में स्कूल के सभी बच्चों ने अपने द्वारा तैयार अनेक मॉडल प्रस्तुत कर प्रतिभा का परिचय दिया। सर्वाधिक आकर्षक मॉडल कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के रहे। प्रथम वर्ग में दूसरी कक्षा ने प्रथम स्थान, तीसरी कक्षा ने द्वितीय स्थान और पहली कक्षा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। द्वितीय वर्ग में चौथीं कक्षा प्रथम, पांचवीं कक्षा द्वितीय तथा छठीं कक्षा ने तृतीय स्थान प्राप्त किए। तृतीय वर्ग में कक्षा आठवीं प्रथम, सातवीं कक्षा द्वितीय और नौवीं कक्षा तृतीय रही। चौथे वर्ग में दसवीं कक्षा पहले, बारहवीं दूसरे और 11वीं कक्षा तीसरे नंबर पर रही। स्कूल निदेशक राजकुमार रूहिल ने विजेताओं को आशीर्वाद दिया। स्कूल प्राचार्य राजपाल सिंह सनवाल ने विद्यार्थियों से ऐसी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान कियया।

नेशनल चैंपियनशिप में हर्ष ने जीता रजत पदक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

सैनिक पब्लिक स्कूल के छात्र हर्ष राठी ने चौथी कूडो नेशनल चैम्पियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए अंडर-12 आर्यवर्ग तथा 30 किलोग्राम भारवर्ग श्रेणी में रजत पदक जीता है। महाराष्ट्र के पुणे में हुई प्रतियोगिता में देश के 26 राज्यों के खिलाड़ियों ने भाग लिया। हर्ष राठी ने हरियाणा का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्कृष्ट खेल कौशल, अनुशासन और आत्मविश्वास का परिचय दिया। उन्होंने उत्तर प्रदेश व जम्मू-कश्मीर के खिलाड़ियों को पराजित करते हुए फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मुकाबले में कड़े संघर्ष के बाद हर्ष ने रजत पदक जीता। प्रधानाचार्य बीएल भारद्वाज ने हर्ष को शॉल तथा फूलों का गुलदस्ता देकर उसके उज्वल भविष्य की कामना की। हर्ष भविष्य में भी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर देश और विद्यालय का नाम रोशन करता रहेगा। शिक्षकों के अनुसार हर्ष की सफलता से अन्य विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलेगी।

बहादुरगढ़। हर्ष को बधाई देते प्रिंसिपल बीएल भारद्वाज। फोटो: हरिभूमि

गुड टच व बैड टच को लेकर किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

गांव लडरावन में स्थित श्री स्वामी समर्थ इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों के लिए गुड टच एवं बैड टच विषय पर एक जागरूकता गतिविधि का आयोजन किया गया। बच्चों को सुरक्षित एवं असुरक्षित स्पर्श के बारे में जागरूक करते हुए सुरक्षा के प्रति सजग किया गया।

विद्यार्थियों को सरल एवं रोचक गतिविधियों, संवाद तथा उदाहरणों के माध्यम से बताया गया कि यदि किसी व्यक्ति के स्पर्श करने पर वे असहज महसूस करें, तो तुरंत अपने माता-पिता, शिक्षक या किसी विश्वसनीय बड़े व्यक्ति को इसकी जानकारी दें। बच्चों ने सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण संदेशों को समझा। स्कूल चेयरमैन अभिषेक छिल्लर ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा और उनका सर्वांगीण विकास विद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकता है। शिक्षकों ने संवादात्मक गतिविधियों, उदाहरणों और प्रश्नोत्तर सत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को जानकारी दी।

बहादुरगढ़। बच्चों को गुड और बैड टच के बारे में बताती शिक्षिका। फोटो: हरिभूमि

विधायक ने जसौर खेड़ी में सौंपा 6 लाख का चेक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

विधायक राजेश जून ने शनिवार को गांव जसौरखेड़ी स्थित निर्माणाधीन मंदिर में आयोजित धार्मिक कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। इस दौरान मंदिर कमेटी के सदस्यों और ग्रामीणों ने विधायक का फूल-मालाओं से स्वागत व सम्मान किया। कार्यक्रम के दौरान विधायक राजेश जून ने मंदिर निर्माण कार्य के लिए 6 लाख की धनराशि का चेक मंदिर कमेटी के प्रतिनिधि को सौंपा।

विधायक ने बताया कि पिछले वर्ष इसी मंदिर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उन्होंने पहले 5 लाख रुपए की धनराशि दान देने की घोषणा की थी। उस समय ग्रामीणों के आग्रह पर उन्होंने अपनी घोषणा बढ़ाकर 11 लाख कर दी थी। उस दौरान 5 लाख की राशि उपलब्ध करा दी गई थी, जबकि शेष 6 लाख रुपए का चेक आज मंदिर कमेटी को दिया है। विधायक राजेश जून ने कहा कि मंदिर केवल पूजा-अर्चना का स्थान नहीं, बल्कि समाज की आस्था और सांस्कृतिक विरासत के केंद्र होते हैं। मंदिर निर्माण से गांव में सामाजिक व धार्मिक एकता भी मजबूत होगी। मंदिर कमेटी और ग्रामीणों ने विधायक राजेश जून द्वारा मंदिर निर्माण में दिए गए 11 लाख के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

बहादुरगढ़। विधायक राजेश जून को स्मृति चिह्न भेंट करते ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

राष्ट्रीय काव्य उत्सव में भाग लेकर विद्यार्थी दिखाएं साहित्यिक प्रतिभा

झज्जर। विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहित करने तथा उनकी सृजनात्मक एवं वाचन प्रतिभा को राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान करने के उद्देश्य से शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय काव्य उत्सव-2026 का आयोजन किया जा रहा है। पंजीकरण के लिए एवं प्रविष्टि जमा करने के लिए अंतिम तिथि आगामी 31 जुलाई निर्धारित की गई है। प्रवक्ता ने बताया कि इस प्रतियोगिता में देशभर के कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। प्रतिभागियों को अपनी कविता के वाचन का वीडियो निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ऑनलाइन जमा करना होगा। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता को निखारने के साथ-साथ उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने का अवसर प्रदान करते हैं।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

पौधरोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

पर्यावरण संरक्षण एवं हरित परिसर के संकल्प को साकार करने के उद्देश्य से राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में ईको क्लब व भूगोल विभाग द्वारा पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशासनिक प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र सिंह ने पौधरोपण करते हुए कहा कि वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी है। बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाना तथा उनका संरक्षण करना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों और कर्मचारियों से लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल करने तथा समाज को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने का आह्वान किया। अभियान के दौरान महाविद्यालय परिसर में विभिन्न प्रजातियों के छायादार एवं पर्यावरण हितैषी पौधे लगाए गए। महाविद्यालय स्टाफ सदस्यों ने लगाए गए पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल का संकल्प भी लिया।

झज्जर। महाविद्यालय परिसर में पौधरोपण करते हुए स्टाफ सदस्य। फोटो: हरिभूमि

इस मौके पर भूगोल विभागाध्यक्ष ओमबीर, पवन कुमार, नीतू देवी, अंजना, प्रदीप कुमार और डॉ. वीरेंद्र सिंह सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

छोटूराम नगर में फंदे पर लटका मिला युवक का शव

बहादुरगढ़। लाइनपार के छोटूराम नगर में फंदे पर लटका एक युवक का शव मिला। मानसिक तनाव से तंग आकर युवक द्वारा फांसी लगाने की बात सामने आई है। असल पुष्टि जांच के बाद हो सकेगी। लाइनपार थाना पुलिस ने पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू करा दी है। मृतक की पहचान करीब 20 वर्षीय सूरज के रूप में हुई है। मूल रूप से उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर से था। कुछ समय से यहां छोटूराम नगर में रहता था और एक कंपनी में काम करता था। शनिवार की सुबह कमरे में वह फंदे पर लटका देखा गया। जब तक किसी की नजर पड़ती, देर हो चुकी थी। उसकी सांस थमी हुई थी। सूचना पाकर लाइनपार थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू की। मौजूद लोगों से पूछताछ की और शव नागरिक अस्पताल में रखवाया। पुलिस के मुताबिक, मानसिक रूप से परेशान होकर युवक द्वारा यह कदम उठाए जाने की आशंका है। हालांकि असल पुष्टि जांच के बाद हो सकेगी।

कप्तान लक्ष्य दलाल ने लिए 6 विकेट हैट्रिक भी ली

सोनीपत को हराकर झज्जर ने लगाई जीत की हैट्रिक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

हरियाणा क्रिकेट एसोसिएशन की ओर से आयोजित पटौदी ट्रॉफी में झज्जर की टीम का बेहतरीन प्रदर्शन लगातार जारी है। शनिवार को लाहली स्थित चौधरी बंसीलाल क्रिकेट स्टेडियम में सोनीपत को 3 विकेट से हराकर जीत की हैट्रिक लगाई। अब टीम का अगला मुकाबला 6 जुलाई को पानीपत के साथ होगा। पटौदी ट्रॉफी टूर्नामेंट में लगातार 2 मुकाबले जीतने वाली झज्जर टीम का तीसरा मुकाबला सोनीपत से हुआ। टॉस के बाद बल्लेबाजी करने उतरी सोनीपत की शुरुआत जरूर बेहतर रही लेकिन बाद में पारी लड़खड़ा गई। टीम की ओर से सर्वाधिक 40 रनों का स्कोर ओपनर युवराज सिंह ने किया। इस तरह से 27.5 ओवर में सोनीपत की टीम 110 रनों पर ऑलआउट हो गई। झज्जर की ओर से शानदार प्रदर्शन करते हुए ऑलराउंडर एवं कप्तान लक्ष्य दलाल ने हैट्रिक के साथ 33 रन देकर कुल 6 विकेट झटके। जबकि सम्मी कादियान ने 2 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी झज्जर की टीम की शुरुआत खराब रही। ओपनिंग में उतरे कप्तान लक्ष्य दलाल 3 रन तो अमित दलाल शून्य पर आउट हो गए। विकेट लगातार गिरती रही। सबसे अधिक 35 रन विकेट कीपर बल्लेबाज यशवर्धन दलाल ने बनाए, जबकि अंत में आकर सामंत व राहुल ने टीम को जीत दिलाई। झज्जर के अगले मुकाबले 6 जुलाई को पानीपत, 7 जुलाई को हिसार के साथ होंगे।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

रोमांच ही नहीं, आध्यात्मिक यात्राओं में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की

मुकुल ने सबसे ऊंची मोटरेबल सड़क पार कर रचा इतिहास

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

गांव सराय औरंगाबाद निवासी मुकुल राठी ने साहस, आस्था और अटूट संकल्प का ऐसा उदाहरण पेश किया है, जिस पर पूरे क्षेत्र को गर्व है। मुकुल ने अपनी 125 सीसी मोटरसाइकिल से बहादुरगढ़ से लेकर उमलिंग ला तक का रोमांचक सफर सफलतापूर्वक पूरा किया। उमलिंग ला दुनिया की सबसे ऊंची मोटरेबल सड़क मानी जाती है।

मुकुल राठी के अनुसार यह यात्रा बिल्कुल आसान नहीं थी। रास्ते में उन्हें लगातार भारी बारिश, बर्फबारी, दुर्गम ऑफ-रोड रास्ते, कड़ाके की ठंड, ऊंचाई पर ऑक्सीजन की भारी कमी और कई जानलेवा परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। तमाम मुश्किलों के बावजूद मुकुल ने हार नहीं मानी और अपने साहस व दृढ़ निश्चय के दम पर मंजिल तक पहुंचकर युवाओं के लिए प्रेरणा बन गए। मुकुल राठी ने केवल रोमांच ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक यात्राओं में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने युल्ला कांडा की कठिन ट्रैकिंग पूरी कर दुनिया के सबसे ऊंचे श्रीकृष्ण मंदिर में दर्शन किए।

दो साल पहले भी उन्होंने हिमालय में स्थित दुनिया के सबसे ऊंचे भगवान शिव के मंदिर तुंगनाथ की यात्रा भी सफलतापूर्वक पूरी की। इसके अलावा मुकुल ने श्रद्धापूर्वक पंच केदार यात्रा भी पूर्ण की, जिसमें केदारनाथ, तुंगनाथ, मध्यमहेश्वर, रुद्रनाथ और कल्पेश्वर के दर्शन शामिल हैं। उन्होंने देश के अनेक प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों जैसे महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग, कार्तिक स्वामी मंदिर और काशी विश्वनाथ मंदिर में भी दर्शन कर अपनी आस्था का परिचय दिया।

बहादुरगढ़। मोटरसाइकिल पर उमलिंग ला तक पहुंचे मुकुल राठी। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

क्या कभी हो पाएगी एलियन से मुलाकात !

क्या एलियन कभी पृथ्वी पर आएंगे? क्या उनसे हमारी मुलाकात हो पाएगी? इस सवाल का फिलहाल कोई सीधा 'हां' या 'ना' में जवाब देना मुश्किल है। एलियंस का धरती पर आना भले ही अभी विज्ञान कथाओं की तरह लगता हो, लेकिन वैज्ञानिक प्रयासों से भविष्य में, असंभव सा लगने वाला कुछ भी संभव हो सकता है।

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

रात के समय जब हम आसमान में टिमटिमाते हुए तारों को देखते हैं, तो हमारे मन में एक सवाल बार-बार उठता है, 'क्या इस विशाल ब्रह्मांड में हम अकेले हैं?' या फिर किसी दूर के ग्रह पर हमारे जैसे ही या हमसे भी ज्यादा समझदार जीव रहते हैं? इन्हीं बाहरी दुनिया के जीवों को हम 'एलियन' या 'एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल' कहते हैं। गणितीय संभावनाओं को देखें तो ब्रह्मांड में कहीं न कहीं जीवन जरूर होना चाहिए। लेकिन अंतरिक्ष की असीम दूरियों को देखते हुए, उनका हमारे पास आना या हमारा उन तक पहुंचना बहुत ही कठिन काम है। वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले कुछ दशकों में, जैसे-जैसे हमारी तकनीक और बेहतर होगी, हम शायद सौर मंडल के किसी चांद या बाहरी ग्रह पर जीवन के छोटे अंश (जैसे बैक्टीरिया) खोजने में सफल हो जाएंगे।

क्यों बरकरार है संभावना

वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारे ब्रह्मांड में अरबों आकाशगंगाएं हैं और हर आकाशगंगा में खरबों तारे और ग्रह हैं। इतनी बड़ी जगह में सिर्फ हमारी पृथ्वी पर ही जीवन हो, ऐसा होना थोड़ा मुश्किल लगता है। इसलिए लगता है कि इस यूनिवर्स में कोई न कोई दूसरी दुनिया हो सकती है। खगोल वैज्ञानिक भी इस विषय पर यही सोचते हैं। इसीलिए वे सालों से एलियंस की खोज कर रहे हैं।

क्या एलियन पृथ्वी पर आएंगे!

हालांकि आम लोगों का मानना है कि कभी न कभी एलियन पृथ्वी पर आए होंगे या आएंगे। लेकिन वैज्ञानिक इस सवाल का जवाब तर्क के आधार पर खोजते हैं। एलियन पृथ्वी पर क्यों आना चाहेंगे? इसके वे कई तर्क देते हैं-

नए घर की खोज: जैसे हमारे वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन तलाश रहे हैं, वैसे ही एलियन भी अपने रहने के लिए एक नए और सुरक्षित ग्रह की तलाश में पृथ्वी पर आ सकते हैं।

संसाधनों की तलाश: अगर उनके अपने ग्रह के प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, खनिज या ऊर्जा आदि खत्म हो गए हों, तो वे पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए यहां का रुख कर सकते हैं।

जिज्ञासा और शोध: हो सकता है कि एलियन भी हमारी पृथ्वी के वैज्ञानिकों की तरह खोजी स्वभाव के हों। वे ब्रह्मांड के दूसरे जीवों यानी हम इंसानों के बारे में जानने और हमसे दोस्ती करने के लिए हमारे पास आ सकते हैं।

तकनीकी श्रेष्ठता: अगर कोई सभ्यता हमसे लाखों साल पुरानी है, तो उनके पास ऐसे स्पेसशिप हो सकते हैं जो रोशनी की रफ्तार से

भी तेज चल सकें। ऐसी तकनीक होने पर उनके लिए पृथ्वी तक आना बहुत आसान होगा।

इसके विपरीत एलियन का आना क्यों मुश्किल है, इसके भी कुछ तर्क देते हैं-

अत्यधिक दूरी: ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि हमारे सबसे करीबी तारे प्रॉक्सिमा सेंचुरी तक पहुंचने में भी आज की तकनीक से हजारों साल लग जाएंगे। एलियंस के लिए भी इतनी लंबी दूरी तय करना एक बड़ी चुनौती होगी।

समय का चक्र: हो सकता है कि ब्रह्मांड के किसी कोने में एलियन रहे हों, लेकिन वे इंसानों के पैदा होने से करोड़ों साल पहले ही खत्म हो चुके हों, या फिर वे तब आएंगे, जब इंसान धरती से गायब हो चुके होंगे।

संवाद की कमी: हमारी भाषा, रेडियो सिग्नल और सोचने का तरीका उनसे बिल्कुल अलग हो सकता है। मुमकिन है कि वे हमारे सिग्नलों को समझ ही न पा रहे हों।

वैज्ञानिक शोध और प्रयास

वैज्ञानिकों ने एलियंस को ढूंढ़ने और उनसे संपर्क करने के लिए कई प्रयास किए हैं।

सेटी प्रोजेक्ट: सर्च फॉर एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस, दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है, जो अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी सिग्नलों पर नजर रखता है। वैज्ञानिक बड़े-बड़े रेडियो टेलीस्कोप का इस्तेमाल करके आसमान से आने वाली आवाजों और तरंगों को सुनते हैं, ताकि एलियंस का कोई संदेश पकड़ा जा सके।

वोयाजर के गोल्डन रिकॉर्ड्स: साल 1977 में नासा ने अंतरिक्ष में दो स्पेसक्राफ्ट भेजे थे, जिनका नाम 'वोयाजर 1' और 'वोयाजर 2' है। इन स्पेसशिप में एक तांबे की बनी सीडी जैसी 'गोल्डन डिस्क' रखी गई है। इस डिस्क में पृथ्वी की आवाजें, संगीत, 55 भाषाओं में नमस्कार और हमारे ग्रह का नक्शा दर्ज है, ताकि अगर कभी यह किसी एलियन को मिले, तो वे हमारे बारे में जान सकें।

यूएफओ और यूएपी की जांच: दुनिया भर में कई बार आसमान में उड़ने वाली अजीबो-गरीब चीजों जैसे उड़न तश्तरी को देखने का दावा किया गया है। अब अमेरिकी सरकार और नासा जैसी एजेंसियां इन्हें 'यूएपी' (अनआइडेंटिफाइड एनोमैलुअस फैनोमेना) कहकर इन पर आधिकारिक रिसर्च कर रही हैं, ताकि यह साफ हो सके कि ये एलियंस के यान हैं या कोई प्राकृतिक घटना।

बहरहाल, भविष्य में कभी दूसरे ग्रह के वासियों एलियंस से पृथ्वीवासियों की कभी मुलाकात हो पाएगी या नहीं यह तो अभी नहीं कहा जा सकता लेकिन दुनिया भर के वैज्ञानिक इस कोशिश में हर संभव प्रयास कर रहे हैं। *

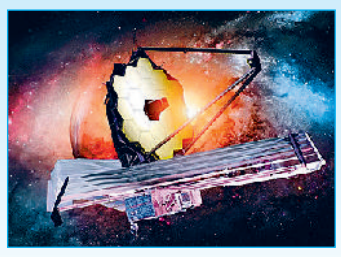

केपलर-जेम्स वेब टेलीस्कोप

नासा के इन आधुनिक टेलीस्कोपों का काम अंतरिक्ष में 'एक्सोप्लैनेट्स' यानी हमारे सौर मंडल से बाहर के ग्रह को खोजना है। वैज्ञानिकों ने अब तक हजारों ऐसे ग्रह खोजे हैं, जो 'गोल्डीलॉक्स जोन' में हैं। इसका मतलब है कि ये ग्रह अपने तारे से न तो बहुत ज्यादा गर्म हैं और न ही बहुत ज्यादा ठंडे, जहां पृथ्वी की तरह पानी और जीवन मौजूद हो सकता है। इसमें जीवन की संभावना भी हो सकती है।

मार्स मिशन

हमारे सबसे नजदीकी ग्रह मंगल पर पानी और जीवन के निशान खोजने के लिए भारत का 'मंगलयान', नासा के 'परसवेरेंस' रोवर जैसे कई मिशन भेजे गए हैं। इनके जरिए वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर सूक्ष्मजीवों के जीवाश्म ढूंढ़ रहे हैं, जो अंतरिक्ष वासी एलियन या जीवन का पहला ठोस सबूत हो सकते हैं।

चिंताजनक है लगातार बढ़ता अंतरिक्ष में वेस्ट मैटर

जिस तरह से हम सबने अपनी पृथ्वी पर प्रदूषक वस्तुओं और कूड़े-कचरे का अंबार लगा रखा है, कुछ ऐसा ही हाल अंतरिक्ष का भी होता जा रहा है। स्पेस में स्पेसक्राफ्ट, एस्ट्रोनॉट्स और सैटेलाइट्स का वेस्ट मैटर भविष्य में गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

स्पेस इश्यू
अंजू जैन

जब हम रात में आसमान की तरफ देखते हैं, तो हमें टिमटिमाते तारे, चंद्रमा और कभी-कभी गुजरते हुए सैटेलाइट्स (उपग्रह) दिखाई देते हैं। यह नजारा बेहद जादुई लगता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे इस खूबसूरत अंतरिक्ष में एक बहुत बड़ी मुसीबत धीरे-धीरे पैर पसार रही है? इस मुसीबत का नाम है-'अंतरिक्ष का कचरा' या 'स्पेस डेब्री'।

क्या है स्पेस डेब्री: जैसे हम अपनी पृथ्वी पर प्लास्टिक, रैपर्स और खराब सामान फेंककर इसे गंदा कर रहे हैं, ठीक वैसे ही इंसानों ने अंतरिक्ष को भी कबाड़खाना बनाना शुरू कर दिया है। अंतरिक्ष कचरा या स्पेस जंक उन सभी मानव-निर्मित बेकार चीजों को कहते हैं, जो अब किसी काम की नहीं रहीं और पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष में चक्कर काट रही हैं। इस कचरे में बेकार हो चुके पुराने सैटेलाइट्स, रॉकेट्स के छूटे हुए टुकड़े, अंतरिक्ष यात्रियों के हाथ से छूटे हुए औजार (जैसे स्क्रू-ड्राइवर, ग्लव्स) और सैटेलाइट्स के आपस में टकराने से बने करोड़ों छोटे-छोटे टुकड़े शामिल हैं। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, इस समय अंतरिक्ष में लाखों छोटे-बड़े टुकड़े तैर रहे हैं, जो एक बड़े खतरे की घंटी हैं।

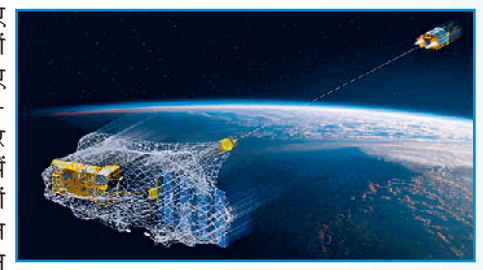

स्पेस डेब्री में शामिल चीजें: स्पेस डेब्री में बहुत कुछ हो सकता है। जैसे-जब किसी उपग्रह का जीवनकाल खत्म हो जाता है या उसका ईंधन समाप्त हो जाता है, तो वह वहीं अंतरिक्ष में निष्क्रिय होकर घूमने लगता है। उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ने के बाद रॉकेट के निचले और ऊपरी हिस्से अलग हो जाते हैं। ये हिस्से अंतरिक्ष में ही तैरते रह जाते हैं। जब दो सैटेलाइट्स आपस में टकराते हैं, तो उनके परखच्चे उड़ जाते हैं। एक टक्कर से हजारों नए छोटे-छोटे तीखे टुकड़े बन जाते हैं।

कुछ देश अपनी मिसाइल क्षमता को जांचने के लिए अंतरिक्ष में अपने ही पुराने सैटेलाइट को मिसाइल से उड़ा देते हैं। इससे पल भर में बेशुमार कचरा फैल जाता है।

स्पेस वेस्ट से संकट: अब आप सोच रहे होंगे कि अंतरिक्ष तो इतना विशाल है, फिर वहां थोड़े से कबाड़ से क्या फर्क पड़ता है? अंतरिक्ष हमारा भविष्य है। अगर आज हमने इसकी सफाई पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ी के लिए ब्रह्मांड के रहस्य जानने के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। इसके कई खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। अंतरिक्ष में ये टुकड़े धीरे-धीरे नहीं तैरते। इनकी रफ्तार बंदूक की गोली से भी 10 से 15 गुना तेज होती है, लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा। इतनी रफ्तार में एक छोटा-सा पेंट का टुकड़ा या पेंच भी किसी सैटेलाइट से टकराए, तो उसे पूरी तरह तबाह कर सकता है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में हमेशा हमारे वैज्ञानिक रहते हैं। यदि कोई बड़ा टुकड़ा स्पेस स्टेशन से टकरा जाए, तो वहां रहने वाले अंतरिक्ष यात्रियों की जान पर बन आ सकती है। उन्हें कई बार खुद को बचाने के लिए आपातकालीन कैप्सूल में छिपना पड़ता है।

हम मोबाइल के जरिए जो बात करते हैं, जीपीएस से रास्ता देखते हैं, टीवी देखते हैं और मौसम का पूर्वानुमान लगाते हैं, वे सब अंतरिक्ष में मौजूद सैटेलाइट्स की वजह से संभव होता है। अगर कचरे की वजह से ये सैटेलाइट्स नष्ट हो गए, तो हमारी पृथ्वी की आधुनिक लाइफलाइन एकदम रुक-सी जाएगी। अगर अंतरिक्ष में कचरा बहुत ज्यादा बढ़ गया, तो वे आपस में टकराकर और अधिक कचरा बनाएंगे। एक समय ऐसा आएगा कि पृथ्वी के चारों ओर कचरे की ऐसी घनी दीवार बन जाएगी कि इंसान कभी नया रॉकेट या सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेज ही नहीं पाएगा। हम हमेशा के लिए पृथ्वी पर कैद हो जाएंगे।

निदान और समाधान: अंतरिक्ष में बढ़ रहे कचरे की इस समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक लगातार प्रयास कर रहे हैं। दुनिया भर की स्पेस एजेंसियां जैसे भारत की इसरो, अमेरिका की नासा इस मलबे को साफ करने के लिए बेहद अनोखे तरीकों पर काम कर रही हैं। वैज्ञानिक ऐसे विशेष सैटेलाइट बना रहे हैं, जो अंतरिक्ष में जाकर बड़े मलबे पर जाल फेंकेंगे या हारपून (भाला) मारकर उसे पकड़ेंगे और खींचकर पृथ्वी के वायुमंडल की तरफ ले आएंगे।

कुछ जापानी कंपनियां ऐसे सैटेलाइट्स का परीक्षण कर रही हैं, जिनमें बहुत शक्तिशाली चुंबक लगे होंगे। ये चुंबक लोहे और धातु के मलबे को अपनी ओर आकर्षित करके चिपका लेंगे। इस तरह कई और तकनीकें अपनाई जा रही हैं। संभव है इसका स्थायी समाधान खोज लिया जाएगा। *

गजल
हबीब कैफी

चला गया कोई

उम्र अपनी बढ़ा गया कोई
नाम लेते ही आ गया कोई
मैंने थामा था हाथ कांटों में
फूल पाकर छुड़ा गया कोई
उसके सारे निशान जिंदा हैं
कैसे कह दूं चला गया कोई
इक तने पर लिखे थे बरसों से
नाम दोनों मिटा गया कोई
नींद यूं ही नहीं हुई गायब
तेरे किस्से सुना गया कोई
सिर्फ इक बात मैंने पूछी थी
बातें क्या-क्या सुना गया कोई
जिक्र जब भी वफा का आया है
सर झुका कर चला गया कोई

व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय

महंगाई से मुलाकात

चाहने को हम भी बहुत कुछ चाहते हैं। हमारी पहली चाहत तो यह ही है कि अपने पास अकूत वैध संपत्ति हो। वैध इसलिए, क्योंकि बुल्डोजर से सबको डर लगता है। बड़े-बड़े मुर्गे हलाल हो गए, फिर भला इस पिद्दी के शोरबे की क्या ही औकात है? हमारी दूसरी चाहत है कि महंगाई नाम की चीज को अपने देश से धक्के मार कर बाहर निकाल देना चाहिए। अंतर्मन में कुछ ऐसी भी चाहतें हैं, जिन्हें सार्वजनिक कर दें तो जूते पड़ने लगेंगे। हमारे एक मित्र ने एक महिला को सिर्फ 'आइ लव यू' कहा था। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, अस्पताल से लौटकर आया है और प्रत्येक महिला को बुआ-दीदी से नीचे नहीं बोलता है।

इंसान कामनाओं का कोष है। मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। सबको फेसबुक-एक्स आदि के दरिया में डालकर अपनी भड़ास निकालने से अच्छा है कि भाग्यवादी बन जाओ। 'जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिए।' हम भी रह ही रहे हैं। घोर महंगाई की चपत खाकर भी हंस रहे हैं। यूं किसी के चाहने या न चाहने से क्या होता है? भला मैं भी कहां चाहता था, फिर भी आज महंगाई से मेरी मुलाकात हो ही गई। वैसे यह कोई नई बात नहीं है। पहले कभी-कभार भेंट होती थी। इन दिनों वह मुझसे रोज ही किसी-न-किसी बहाने मेरे घर पर मिलने आ जाया करती है। जब मैं घर से बाहर रहता हूं तो वह वहां पर भी मुझसे टकरा जाती है। बाजार जाऊं तो वहां भी मिल जाती है। सड़क पर चल रहा होता हूं, तब भी वह हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। पत्नी कहती है, 'यह मुई मेरी सौत है। इसकी निगाह तुम्हारे शरीर के साथ तुम्हारी जेब पर भी रहती है।'

मैं अकसर यह महसूस करता हूं कि मेरी जेब में रखा हुआ पर्स भी जरूरत से ज्यादा दुबला हो चुका है। महंगाई डायन के प्रकोप के चलते 'चंद क्वॉइन' ही शेष बचे हुए हैं। गनीमत है कि वह पूरी तरह खाली नहीं हुआ है। शायद इसी दुबले पर्स पर महंगाई डाका डालने पर उतारू है। जिसके पास धन नहीं है, उसको न चोरी का डर सताता है और न रहजनी का। उसे एकमात्र डर सताता है तो महंगाई का।

मेरा प्रतिदिन महंगाई से इसी तरह मिलना होता रहा तो एक दिन इस गरीब की जान ही निकल जाएगी। आप जानते हैं कि गरीब की जान उसकी हलक में अटकी होती है। यह उस चिड़िया की तरह होती है, जिसे जब तक दाना-पानी मिलता रहता है, चहकती रहती है, जिस दिन मिलना बंद हो गया, फुर्र से उड़ जाती है। लोग यूं ही प्राण को पखेरू नहीं कहते हैं।

मैं इस नामाकूल महंगाई से कितना भी बचना चाहता हूं, लेकिन वह है कि हाथ धोकर मेरे गले पड़ती जा रही है। आज महंगाई फिर एक बार मुझसे मिलने आई है। वह आवश्यकता से अधिक मोटी दिख रही है। पिछली बार जब उससे मिलना हुआ था, तब भी वह मोटी ही थी, लेकिन इस बार उसके शरीर की चर्बी पर एक और परत चढ़ चुकी है। वैसे भी जो प्रतिदिन दूसरों की जेब पर डाका डालता हो, उसका मोटा हो जाना अचरज की बात नहीं है। मैं अपने आस-पास के ऐसे तमाम लोगों को जानता हूं, जो दूसरों को लूटते रहते हैं और मोटे हो जाते हैं। महंगाई भी पुष्ट हो रही है। वह मुझसे कहने लग गई, 'तुम मेरे नाम का रोना रोते रहते हो, मैंने सोचा आज एक बार और मिल लेती हूं! कहो, कैसे मिजाज हैं?' मैंने कहा, 'मिजाज की छोड़ो। तुमने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। तुम जिस अनुपात में मोटी होती चली जा रही हो, हम उसी अनुपात में दुबले हो रहे हैं। उधर तुम्हारी खुराक बढ़ती जा रही है, इधर हम अपने को किसी दिहाड़ी मजदूर की पगार जैसा बेबस पाते हैं।'

महंगाई जैसे आज विश्व हास्य दिवस मनाने के मूड में थी। वह पहले खूब हंसी, फिर मुझे छेड़ती हुई बोली, 'देख रही हूं। तुम्हारे पांवों में बेबसी के घुंघरू बंधे हुए है, फिर भी तुम ठुमक रहे हो। तुम जैसे बकरे को कहां पता है कि कल मैं तुमको किस भारी-भरकम रूप में मिलने वाली हूं!' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

विडंबनाओं पर कटाक्ष

आज के बहुरूपिए समय में तमाम तरह की विडंबनाओं और विसंगतियों के संग जीने के लिए हम सब इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि किसी भी प्रकार के विद्रूप में असहज महसूस नहीं करते हैं। लेकिन एक व्यंग्यकार की सजग दृष्टि न केवल जीवन और व्यवस्था में धंसे विद्रूप को इंगित करती है, उस पर कटाक्ष भी करती है। सुपरिचित व्यंग्यकार मुरली मनोहर श्रीवास्तव के ऐसे ही चुने हुए 65 व्यंग्यों का संग्रह 'डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग' हाल में छपकर आया है। इनमें कहीं वे नेशनल कैरेक्टर से लेकर, आटा से ज्यादा डाटा की चिंता करते नजर आते हैं, तो

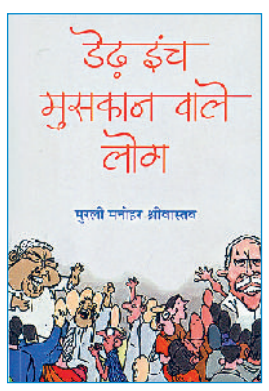

कहीं चुटकी लेते हुए मीडिया का महिमा मंडन करते दिखते हैं। 'ऑफिस रस' शीर्षक व्यंग्य में वह लिखते हैं, 'जिसे एक बार ऑफिस रस की लत लग गई, वह इसकी प्रॉपर डोज के बिना रह ही नहीं पाता। वह कहीं भी रहे, किसी भी हाल में पड़ा हो, इस रस की प्राप्ति के लिए छटपटाता रहता है।' हर खास-ओ-आम की जिंदगी में आज की तारीख में इंटरनेट डाटा का क्या महत्व हो चुका है, इस बारे में व्यंग्यकार की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। 'आटा और डाटा' शीर्षक व्यंग्य में वह कहते हैं, 'कई बार लगता है कि आटा न भी मिले तो चलेगा पर डाटा खत्म हो गया तो जीकर क्या करेंगे? लड़ाई यह है कि आटा जन-जन तक पहुंचा कि डाटा?' *

पुस्तक: डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग (व्यंग्य संग्रह), **लेखक:** मुरली मनोहर श्रीवास्तव, **मूल्य:** 400 रुपए, **प्रकाशक:** विद्या विहार, नई दिल्ली

हरिभूमि रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

सीजनल टूरिज्म / समीर चौधरी

हर नेचर लवर टूरिस्ट, मानसून में भीगी हरी-भरी पहाड़ी वादियों को करीब से निहारना चाहता है। हालांकि आमतौर पर इस सीजन को ट्रैकिंग के लिए सुटेबल नहीं माना जाता है। लेकिन कुछ ऑफबीट-सुरक्षित हिमालयी ट्रैकिंग स्पॉट्स पर जाकर आप अपनी इस चाहत को पूरा कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ बेमिसाल ट्रैकिंग स्पॉट्स पर एक नजर।

मानसून में करिए फुल एंज्वॉय ये हिमालयन ट्रैकिंग स्पॉट्स

अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट परांग ला ट्रैक, हिमाचल प्रदेश

परांग ला ट्रैक (18,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित) अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट माना जाता है, क्योंकि लद्दाख व स्पीति को जोड़ने वाला इसका पथरीला, तीखी ढलान वाला रूट थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप इस ट्रैक पर शुरुआत लेह के करजोक गांव से या स्पीति के चिचम/किब्बर गांव से कर सकते हैं। कठिन रास्तों के बावजूद आपको जादुई नजारे देखने को मिलेंगे। इस दौरान आप खिले हुए जंगली फूल, गहरी नीली त्सो मोरिरी झील के अलावा किआंग या तिब्बती जंगली गधों के झुंडों को भी कूदते-दौड़ते हुए देख सकते हैं। इसे विजिट करने का सबसे अच्छा समय जुलाई के मध्य से सितंबर की शुरुआत तक होता है। *

मोहक नजारा दिखाए मरखा घाटी, लद्दाख

जुलाई और सितंबर के मध्य में मरखा घाटी (17,060 फीट की ऊंचाई पर स्थित) की दूधिया सफेद नदियां, सुंदर लैंडस्केप और विशाल पहाड़ों की पृष्ठभूमि में हरी-भरी वादियां मन मोह लेती हैं। यहां से कांग यत्से पहाड़ का दिलकश नजारा भी दिखता है। यह ट्रैक लेह से आरंभ होता है और फिर जब आप ऊपर की तरफ बढ़ते हैं तो हेमिस नेशनल पार्क, सुदूर गांवों और आध्यात्मिक ताचा मठ से होते हुए यह सफर यादगार बनता चला जाता है। यहां ट्रैकिंग करते हुए आपको हिमालयन ब्लू शीप, हिमालयन ग्रिफ्फोन, स्नो लेपर्ड और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दीदार करने का अवसर भी मिलता है। *

हिडन डायमंड दरमा घाटी ट्रैक, उत्तराखंड

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित दरमा घाटी ट्रैक (14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित) एक छुपा हुआ हीरा कहा जाता है, जो आपको आकर्षक गांवों, घने जंगलों, रोलिंग घास के मैदानों और ग्लेशियर से पोषित धाराओं से रूबरू कराता है। इन सबकी पृष्ठभूमि में होती हैं हिमालय की विशाल ऊंची चोटियां। जब मानसूनी बारिश इस लैंडस्केप को भिगो देती है, तो यह वादी हरियाली और जंगली फूलों की सुगंध से भर जाती है। रास्ते में आपको बर्फ से ढंके पहाड़ मिलेंगे। आप इस दौरान स्थानीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति और मेजबानी का भी आनंद ले सकते हैं। जून से सितंबर इस ट्रैक पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय है। *

हसीन वादियों से समृद्ध पिन घाटी, हिमाचल प्रदेश

मानसून में ट्रैकिंग के लिए एक अन्य बेहतरीन ट्रैकिंग स्पॉट पिन घाटी (15,780 फीट की ऊंचाई पर स्थित) है। यहां हरे-भरे जंगलों, विशाल घास के मैदानों, पथरीले रास्तों, बर्फ से ढंके मैदानों और ठंडे रेगिस्तानों का फोटो-फ्रेंडली नजारा देखने को मिलता है। यह ट्रैकिंग मुध नामक गांव से आरंभ होती है। पूरी तरह बर्फ सं ढंकी झोपड़ियों की पृष्ठभूमि में मटर और जौ के खेत और तेज हवाओं के साथ झूमते पेड़-पौधे आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रैकिंग के दौरान आप प्राकृतिक गर्म पानी के चश्मों के लिए विख्यात खीरगंगा पर रुक सकते हैं। पिन नेशनल पार्क के साथ गेचांग, का और थंगो जैसे स्थान देखना न भूलें। यहां जाने के लिए सबसे अच्छा समय जुलाई से मध्य सितंबर तक माना जाता है। *

वन्य-जीवन से दीदार कराता तोसामैदान ट्रैक, कश्मीर

इस मौसम में ट्रैकिंग की सोच रहे हैं तो तोसामैदान ट्रैक (12,460 फीट की ऊंचाई पर स्थित) आपकी बकट लिस्ट में अवश्य होना चाहिए। कश्मीर के गुलमर्ग में स्थित यह ट्रैक विशाल पीर पंजाल रेंज, अल्पाइन घास के मैदान, शंकुधारी और चीड़ के जंगलों, चमचमाती झीलों और बर्फ से ढंके पहाड़ों से होकर गुजरता है। इस मार्ग पर ट्रैकिंग के दौरान विभिन्न हिमालयी वन्य जीवों जैसे कस्तूरी हिरण, लेपर्ड और विभिन्न प्रजातियों की मुर्गियां आदि को देखने का मौका आपको मिलेगा। यहां ट्रैकिंग करने का सबसे अच्छा समय जुलाई से सितंबर तक का होता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / नरेंद्र कुमार

किसी भी प्रोफेशन में ग्रो करने के लिए लगातार सीखना और खुद को बेहतर बनाने की क्षमता का होना जरूरी है। ऐसा तभी हो सकता है, जब आपको अपनी कमियां पता हों। कमियां पता लगाने के लिए बॉस ही नहीं कुलीग्स, सीनियर्स का फीडबैक भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

करियर ग्रोथ के लिए इंपॉर्टेंट है फीडबैक

आज के दौर में प्रोफेशनल दुनिया में कामयाबी के लिए सिर्फ मेहनत करना ही काफी नहीं है। कंपनियां अब अपने स्टाफ में ऐसे लोगों को चाहती हैं, जो हर समय सीखने को तैयार रहें। जो अपनी कमियों को पहचान सकें और किसी के द्वारा बताए जाने पर उसमें जरूरी सुधार करें। यही कारण है कि फीडबैक आज करियर ग्रोथ का एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। वास्तव में फीडबैक एक ऐसा आईना है, जिसमें हम अपनी प्रोफेशनल इमेज बहुत अच्छी तरह से देख सकते हैं। जो लोग इस आईने से डरते नहीं, वे लोग सचमुच इससे बहुत कुछ सीखते हैं।

क्या है फीडबैकः फीडबैक का मतलब केवल आपकी गलती बताया जाना नहीं होता। यह आपके प्रोफेशनल बिहेवियर, काम की प्रस्तुति और क्षमता का किया गया मूल्यांकन होता है, जिसमें सुझाव भी शामिल होता है। इसे अगर आप सकारात्मक तरीके से लेते हैं तो यह आपको बेहतर बनाने में मदद करता है और अगर आप इसे अपनी व्यक्तिगत अलोचना के तौर पर लेते हैं, तो इससे आपको नुकसान हो सकता है।

जरूरी है फीडबैकः डेढ़-दो दशक पहले नौकरियां आज के मुकाबले अपेक्षाकृत स्थिर हुआ करती थीं। लोग बीस-बीस, तीस-तीस साल तक एक ही कंपनी में गुजार देते थे। आज के समय में कंपनियां जरूरी नहीं है कि अगर किसी को अपने यहां रख लें तो उसे सालों-साल ढोती ही रहें। हां, आज भी दस पर्सेंट ऐसे कर्मचारी होते हैं, जो कई साल एक ही कंपनी में गुजार देते हैं। सवाल है, ऐसे थोड़े लोगों में क्या खूबी होती है कि आज भी कंपनियां इन थोड़े से लोगों को अपने साथ लंबे समय तक बनाए रखना चाहती हैं? दरअसल, आज कंपनियां उन्हीं कर्मचारियों को लंबे समय तक अपने साथ बनाए रखने में तरजीह देती हैं, जो अपनी प्रोफेशनल स्किल को लगातार बेहतर बनाने की कोशिश में रहते हैं और जब भी उन्हें कुछ सीखने का मौका मिलता है, जल्द से जल्द सीखने की कोशिश करते हैं। जो अपनी गलतियों में सुधार करने के लिए तैयार रहते हैं, समय और परिस्थितियों के मुताबिक काम के तौर-तरीके में जरूरी बदलाव करते हैं और टीम के साथ बेहतर तालमेल बनाए रखते हैं। वास्तव में ये क्वालिटीज फीडबैक के बेहतर उपयोग के नतीजे के रूप में सामने आती हैं।

फीडबैक बदलता है दिशाः कई बार लोगों को खुद अपनी कमजोरियों का अंदाजा नहीं हो पाता। ऐसे में अगर आप स्वयं को मिले फीडबैक के बाद अपने काम की गुणवत्ता के बारे में जरूरी समझकर, अपनी कमी को सुधारने की कोशिश करते हैं, तो यह कोशिश आपके लिए न केवल प्रमोशन बल्कि आगे चलकर टीम लीड करने की राह भी खोलेगी। यहां सीनियर्स को फीडबैक देने के तरीके के बारे में भी समझना जरूरी है। अकसर सीनियर्स गलत तरीके से या गुस्से में फीडबैक देते हैं। मसलन, किसी के काम में उन्हें कोई कमी नजर आती है, तो वह छूटते ही कह देते हैं, 'तुम हमेशा ही गलत काम करते हो।' इससे आपका कुलीग असहज हो जाता है। होना यह चाहिए कि किसी कुलीग या जूनियर को फीडबैक दें तो उसमें केवल कमी निकालने की बजाय उसके काम को और बेहतर बनाने के सुझाव पर फोकस होना चाहिए।

फीडबैक लेने का सही तरीकाः फीडबैक देने के सही तरीके की तरह ही इसे लेने का तरीका भी सही होना चाहिए। सही तरीका यह है कि हम अपने काम में खामी निकालने वाले व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनें, उसे बीच में कतई न टोकें। आप अपने लिए दिए गए महत्वपूर्ण सुझाव को लिख लें, ताकि बाद में जब अकेले में हों, तो उसे और बेहतर तरीके से समझ सकें। कोई भी फीडबैक मिलने पर आप सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन यह सवाल रिएक्शन या ऑब्जेक्शन न लगे बल्कि आपको दी जा रही सलाह को और स्पष्ट किए जाने के संबंध में होना चाहिए या फिर बेहतर करने की इच्छा से संबंधित होना चाहिए। *

पुराने दौर से लेकर आज के समय में भी दुनिया भर के देशों में जन्मदिन के उत्सव को अलग-अलग तरीके से मनाया जाता रहा है। कुछ जगहों की परंपराएं तो बहुत ही अजब-अनोखी हैं। इनमें से कुछ दिलचस्प परंपराओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

बर्थ-डे सेलिब्रेशन के अजब-अनोखे तरीके

बच्चों का 'किंडरफेस्ट' सेलिब्रेशन, जर्मनी

जन्मदिन पर 'पिन्याटा' फोड़ने की प्रथा, मैक्सिको

रोचक / नेहा जैन

बर्थ-डे का नाम सुनते ही सबसे पहले आपकी कल्पना में चारों तरफ सजे हुए रंग-बिरंगे गुब्बारे और मेज पर रखा सजा हुआ केक आता होगा। केक काटना आज जन्मदिन के उत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। लेकिन केक के आविष्कार के पूर्व या उसके बाद भी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लोग किस तरह बर्थ-डे सेलिब्रेट करते थे, यह जानना बहुत दिलचस्प है।

प्राचीन यूनान (ग्रीस): प्राचीन काल में यूनान देश के लोग जन्मदिन के अवसर पर चंद्रमा की देवी आर्टेमिस के सम्मान में गोल आकार का शहद वाला केक बनाते थे, जो चांद का प्रतीक माना जाता था। केक पर जलती मोमबत्तियां चांद की चांदनी की तरह चमकती थीं। उनका मानना था कि मोमबत्तियों का धुआं उनकी प्रार्थनाओं को देवताओं तक पहुंचाता है।

रोमन सभ्यता: प्राचीन रोम में भी जन्मदिन के अवसर पर आटे, मेवों और शहद से बने केक या मीठी ब्रेड खिलाने का चलन था।

प्राचीन मिस्र (इजिप्ट): प्राचीन मिस्र के फराओ (राजाओं) के राज्याभिषेक के दिन को उनका 'जन्मदिन' माना जाता था, जिसे भव्य उत्सव के रूप में मनाते थे। इस अवसर पर विशेष तरह के कई पकवान बनाए जाते थे।

जर्मनी का किंडरफेस्ट: 18वीं शताब्दी में जर्मनी में बच्चों के जन्मदिन पर विशेष उत्सव मनाया जाता था, जिसे 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। यहां बच्चे की उम्र के अनुसार केक पर मोमबत्तियां लगाई जाती थीं और एक अतिरिक्त मोमबत्ती गुड लक के लिए रखी जाती थी।

ऐसे भी करते हैं बर्थ-डे सेलिब्रेटः आज भी दुनिया के अलग-अलग देशों में जन्मदिन को अनूठे तरीकों से मनाते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

चीनः चीन में बच्चे के बर्थ-डे पर केक की जगह लंबी उम्र के प्रतीक के रूप में 'लॉन्जिविटी नूडल्स' खाए जाते हैं। मान्यता है कि नूडल्स जितने लंबे होंगे, उम्र उतनी ही लंबी होगी। हालांकि अब वहां केक के साथ भी बर्थ-डे सेलिब्रेशन लोकप्रिय है।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडः इन दोनों देशों में बर्थ-डे के अवसर पर फलों और क्रीम से सजी 'पावलोवा' केक बनाया और खाया जाता है।

जापानः यहां 3, 5 और 7 साल का होने पर बच्चों का जन्मदिन विशेष उत्सव के रूप में मनाते हैं, जहां वे पारंपरिक किमोनो पहनकर मंदिर जाते हैं। यह परंपरा शिकी-गो-सान कहलाती है।

मैक्सिकोः यहां जन्मदिन की पार्टियों में 'पिन्याटा' फोड़ने का रिवाज है। यह कागज से बना बड़ा-सा खिलौना या गुब्बारा होता है। इसे कैंडी और छोटे-छोटे खिलौनों से भरा जाता है, फिर ऊंचाई पर लटका दिया जाता है। फोड़ने पर इससे निकलने वाले उपहारों को बच्चे बड़े उत्साह से लूटते हैं।

दक्षिण कोरियाः यहां जन्मदिन की सुबह 'मियेओक-गुक' (सीवीड सूप) पीना अनिवार्य माना जाता है। यह मां के प्रति सम्मान जताने का तरीका है, क्योंकि प्रसव के बाद मांएं इसे खाती हैं।

डेनमार्कः डेनमार्क में यदि किसी के घर के बाहर राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा हो तो इसका मतलब है कि घर में किसी का जन्मदिन है।

कनाडाः कनाडा में कुछ जगहों पर बर्थ-डे पर उस व्यक्ति की 'नोज ग्रीसिंग' की परंपरा है। माना जाता है कि नाक पर मक्खन लगाने से आने वाले साल में उसकी मुसीबतें फिसल कर दूर चली जाएंगी। कनाडा और अमेरिका में लड़कियों के 16वें जन्मदिन को बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे स्वीट सिक्सटीन फेस्टिवल के रूप में मनाते हैं।

लैटिन अमेरिकाः लैटिन अमेरिकी देशों में लड़कियों के 15वें जन्मदिन को विशेष धूमधाम से मनाया जाता है, जो उनके बचपन से वयस्कता की ओर बढ़ने का प्रतीक होता है। *

भारत में बर्थ-डे सेलिब्रेशन

अपने देश भारत में जन्मदिन पर मंदिर जाने, अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेने और नए कपड़े पहनने आदि का रिवाज है। हालांकि महानगरों में आजकल बर्थ-डे पर केक काटना पॉपुलर हो गया है। लेकिन भारत में पारंपरिक रूप से इस अवसर पर खीर, मिठाई या हलवा खिलाया जाता है।

अनूठे बर्थ-डे केक्स

बर्थ-डे केक से जुड़ी कुछ बातें बहुत ही इंट्रेस्टिंग हैं। **भारत का सबसे भारी बर्थ-डे केकः** भारत का सबसे भारी और लंबा बर्थडे केक 5.7 टन का था। यह विशाल केक जनवरी 2020 में भारतीय अभिनेता 'रॉकिंग स्टार यश' के जन्मदिन के अवसर पर बेंगलुरू, कर्नाटक में बनाया गया था। इसे बनाने में 22,500 अंडे, 1,800 किलोग्राम मैदा और 1,150 किलोग्राम चीनी का इस्तेमाल किया गया था। इस केक को 'श्री राम भवन स्वीट्स एंड बेकरी' के 20 कारीगरों ने 96 घंटों में तैयार किया था।

दुनिया का सबसे महंगा केकः दुनिया का सबसे महंगा केक ब्रिटिश डिजाइनर डेबी विंघम द्वारा वर्ष 2015 में बनाया गया था, जिसकी कीमत लगभग 75 मिलियन डॉलर (करीब 625 करोड़ रुपए) थी। यह केक एक फैशन रनवे की थीम पर आधारित था, जिसमें 4,000 से अधिक असली हीरे और कीमती रत्न जड़े गए थे।

दुनिया का सबसे बड़ा बर्थ-डे केकः यह रिकॉर्ड सन् 1990 में अमेरिका के अलबामा राज्य के फोर्ट पायने शहर के 100वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बने केक के नाम है।

सिने-ट्रेंड / गौरव द्विवेदी

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल महान अभिनेताओं का दौर नहीं था, बल्कि महान लेखकों का भी दौर था। 1950, 60 और 70 के दशक में बॉलीवुड की सबसे बड़ी ताकत उसके लेखक हुआ करते थे। उस दौरान फिल्मों की नींव प्रायः साहित्य पर रखी जाती थी और पटकथा लेखक फिल्म निर्माण की प्रक्रिया के केंद्र में हुआ करते थे। यही कारण है कि उस दौर की अनेक फिल्में आज भी प्रासंगिक लगती हैं, जबकि तकनीकी रूप से कहीं अधिक उन्नत आज की कई फिल्में कुछ वर्षों में ही भुला दी जाती हैं।

साहित्य-सिनेमा चलते थे साथ-साथः हिंदी फिल्मों के उस स्वर्ण युग के पीछे प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन और भारतीय साहित्यिक परंपरा का गहरा प्रभाव था। उर्दू और हिंदी साहित्य से जुड़े अनेक लेखक फिल्म उद्योग में आए। इनमें साहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्र सिंह बेदी, इस्मत चुगताई, कृशन चंदर, अली सरदार जाफरी, राही मासूम रजा, गुलशन नंदा, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी और शैलेंद्र के नाम प्रमुख थे। इन लेखकों ने फिल्मों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया, बल्कि समाज, राजनीति और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज बना दिया।

साहित्य का विस्तार होती थीं फिल्मी पटकथाः उस दौर में पटकथा लेखन सिर्फ घटनाओं का क्रम नहीं था, बल्कि साहित्य का स्वाभाविक विस्तार हुआ करता था। ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'आवारा', 'श्री 420', 'जागते रहो' और 'बॉबी' जैसी फिल्मों में सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया। राजेंद्र सिंह बेदी ने 'देवदास', 'मधुमती' और 'अनुपमा' जैसी फिल्मों की पटकथाओं में साहित्यिक गहराई जोड़ी। राही मासूम रजा ने 'मैं तुलसी तेरे आंगन की', 'गोलमाल' और बाद में 'महाभारत' (सीरियल) से अपनी पहचान बनाई।

साहित्य से निकली कालजयी फिल्मेंः यह वह दौर था, जब फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर 'तीसरी कसम' बनी, आर. के. नारायण के उपन्यास पर 'गाइड' बनी, बिमल मित्र के उपन्यास पर 'साहिब बीवी और गुलाम' बनी।

लेखकों की मेज से उपजा हिंदी सिनेमा का स्वर्णयुग

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल सितारों का नहीं, बल्कि लेखकों का भी स्वर्णिम समय था। साहित्य से निकली कहानियों और सशक्त पटकथाओं ने उस दौर की फिल्मों को कालजयी बनाया। आज जब बॉलीवुड सशक्त कहानी की कमी से जूझ रहा है, ऐसे में उसे फिर से साहित्य की ओर लौटने की दरकार है।

मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, धर्मवीर भारती और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों की रचनाएं भी फिल्मकारों को प्रेरित करती थीं। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे फिल्मकारों का प्रभाव भी हिंदी सिनेमा के गंभीर रचनाकारों पर दिखाई देता था।

पटकथा लेखन के स्टार सलीम-जावेदः 1970 के दशक में पटकथा लेखन को नई ऊंचाई सलीम-जावेद की जोड़ी ने दी। 'जंजीर', 'दीवार', 'शोले', 'त्रिशूल', 'डॉन' और 'शक्ति' जैसी फिल्मों ने साबित किया कि मजबूत कहानी और दमदार संवाद किसी भी फिल्म की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं। यह संयोग नहीं है कि इन फिल्मों के संवाद आज भी लोगों की यादों में बसे हुए हैं।

बदलने लगीं प्राथमिकताएंः 1980 के दशक में हिंदी सिनेमा की दिशा बदलने लगी। वीडियो कैसेट संस्कृति, टेलीविजन का विस्तार और तेजी से बढ़ते व्यावसायिक दबावों के बीच कहानी की जगह फॉर्मूले ने लेनी शुरू कर दी। 'डिस्को डांसर' और 'हिम्मतवाला' जैसी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता ने निर्माताओं को यह विश्वास दिलाया कि संगीत, सितारे और मनोरंजक मसाले, सशक्त कहानी की कमी पूरी कर सकते हैं।

नहीं है कहानियों की कोई कमीः वास्तव में बॉलीवुड की समस्या प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि साहित्य और समाज से दूरी है। हिंदी पट्टी में प्रेमचंद, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, अमरकांत, काशीनाथ सिंह, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, संजीव और नीलोत्पल मृणाल जैसे लेखकों का विशाल संसार मौजूद है। लोककथाओं, इतिहास, ग्रामीण भारत, छोटे शहरों, सामाजिक बदलावों और समकालीन भारत के असंख्य अनुभवों से भरी कहानियां आज भी लिखी जा रही हैं। जरूरत केवल उन्हें पर्दे पर लाने की इच्छा की है।

फिर से देना होगा कहानियों को महत्वः यदि बॉलीवुड को अपनी खोई हुई रचनात्मक ऊर्जा वापस हासिल करनी है तो उसे फिर से लेखकों की महत्ता को स्वीकारना होगा। आखिरकार 'मदर इंडिया', 'दो बीघा जमीन', 'गाइड', 'आनंद' जैसी फिल्मों को कैमरों ने नहीं, कहानियों ने अमर बनाया था। सिनेमा का भविष्य भी वहीं से निकलेगा जहां उसका स्वर्णिम अतीत जन्मा था यानी लेखकों की मेज से। *

(लेखक फिल्म नीति के जानकार हैं)

दक्षिण भारतीय फिल्मों में बरकरार कहानी का महत्व

दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योगों ने कहानी की परंपरा को बनाए रखा। मलयालम सिनेमा में एम. टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, लोहितदास और हाल के वर्षों में दिलीश पोथन तथा श्याम पुष्करण जैसे लेखकों-निर्देशकों ने साहित्य और समाज से जुड़ी कहानियों को जीवित रखा। तमिल सिनेमा में जयकांतन, सुजाता और बाद में वेट्रिमारन जैसे फिल्मकारों ने यथार्थवादी कथाओं की परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी का परिणाम है कि 'दृश्यम', 'प्रेमम', 'कुंबलंगी नाइट्स', 'महाराजा', 'असुरन', 'जय भीम', '96', 'कांतारा', 'चार्ली 777' और 'पुष्पा' जैसी फिल्में अपनी स्थानीय संस्कृति में रची-बसी होने के बावजूद राष्ट्रीय और वैश्विक दर्शकों तक पहुंचती हैं। ये फिल्में दर्शाती हैं कि स्थानीयता ही वैश्विकता का रास्ता बन सकती है